गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 187
दि. 08.11.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

सुप्रीम कोर्ट का सख्त आदेश: अब स्कूल, कॉलेज और अस्पतालों से हटाए जाएंगे आवारा कुत्ते

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश में बढ़ते कुत्तों के काटने के मामलों पर गंभीर चिंता जताते हुए सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को एक ऐतिहासिक आदेश पारित किया। अदालत ने निर्देश दिया कि स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन जैसे संस्थागत क्षेत्रों से आवारा कुत्तों को तुरंत हटाया जाए और उन्हें शेल्टर होम में स्थानांतरित किया जाए। अदालत ने यह भी कहा कि राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों से आवारा पशुओं को भी हटाया जाए ताकि आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय पीठ — न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति संदीप मेहता और न्यायमूर्ति एन.वी. अंजारिया — ने यह आदेश उस समय दिया जब देशभर में कुत्ते के काटने की घटनाओं से जुड़े मामलों में तेजी से वृद्धि देखी जा रही है। अदालत ने कहा कि संस्थागत क्षेत्रों में आवारा कुत्तों की मौजूदगी नागरिकों के जीवन और सुरक्षा के अधिकार का उल्लंघन है, जो संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत संरक्षित है।

पीठ ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि वे दो हफ्ते के भीतर ऐसे संस्थागत क्षेत्रों की पहचान करें और आठ हफ्ते में वहां चारदीवारी या बाड़ लगाकर उन्हें सुरक्षित करें ताकि कुत्ते दोबारा प्रवेश न कर सकें।

साथ ही स्थानीय निकायों को आदेश दिया गया कि वे इन क्षेत्रों से कुत्तों को पकड़कर नसबंदी और टीकाकरण के बाद डॉग शेल्टर में रखें, लेकिन उन्हें दोबारा उसी जगह वापस न छोड़ें। अदालत ने साफ कहा कि ऐसा करने से इस अभियान का उद्देश्य ही विफल हो जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने चेतावनी दी कि इस आदेश के उल्लंघन पर स्थानीय निकायों और संबंधित अधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार ठहराया जाएगा। न्यायालय ने कहा कि प्रत्येक संस्थान को एक नोडल अधिकारी नियुक्त करना होगा जो परिसर की साफ-सफाई और सुरक्षा सुनिश्चित करे तथा आवारा कुत्तों की मौजूदगी की नियमित निगरानी करे।

अदालत ने नगर निगमों को भी निर्देश दिया कि वे हर तीन महीने में ऐसे क्षेत्रों का निरीक्षण करें और रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

सुनवाई के दौरान अदालत ने टिप्पणी की कि कुत्तों के काटने से रेबीज जैसी घातक बीमारियों के मामले लगातार बढ़ रहे हैं, और यह न केवल प्रशासनिक लापरवाही को दर्शाता है बल्कि नागरिकों के जीवन की सुरक्षा में गंभीर विफलता भी है। अदालत ने कहा कि यह न्यायपालिका का दायित्व है कि वह नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करे और आवश्यक होने पर तत्काल हस्तक्षेप करे।

इसके साथ ही शीर्ष अदालत ने कुछ अतिरिक्त आदेश भी पारित किए — सभी सरकारी और निजी अस्पतालों को हर समय एंटी-रेबीज टीके और इम्युनोग्लोबुलिन का पर्याप्त स्टॉक बनाए रखना होगा। शिक्षा मंत्रालय को निर्देश दिया गया कि देशभर के स्कूल और कॉलेज छात्रों तथा कर्मचारियों के लिए कुत्ते के काटने से बचाव और उपचार पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करें। अदालत ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों से आठ सप्ताह के भीतर हलफनामा दाखिल करने को कहा, जिसमें यह विवरण हो कि उन्होंने इन आदेशों का पालन किस हद तक किया है।

मामले की अगली सुनवाई 13 जनवरी को निर्धारित की गई है, जिसमें अदालत इन आदेशों के अनुपालन की समीक्षा करेगी। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि आवश्यक हुआ तो वह नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए और भी कठोर आदेश पारित करेगी। इस पूरे आदेश का मूल उद्देश्य यह है कि देश के किसी भी नागरिक को केवल इसलिए अपनी जान जोखिम में न डालनी पड़े क्योंकि प्रशासन ने समय पर कदम नहीं उठाए।

रूस से नाटो पर संभावित हमले की आशंका, जर्मन जनरल ने दी चेतावनी

(जीएनएस)। बर्लिन। यूरोप में बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच जर्मनी के शीर्ष सैन्य अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल अलेक्जेंडर सोल्क्रैंक ने आगाह किया है कि रूस किसी भी समय नाटो (उत्तर अटलांटिक संधि संगठन) के सदस्य देशों में से किसी एक पर सीमित पैमाने पर हमला कर सकता है। सोल्क्रैंक ने कहा कि वर्तमान परिस्थिति में रूस की सैन्य स्थिति ऐसी है कि वह अल्प अवधि में एक छोटा लेकिन प्रभावी सैन्य अभियान छेड़ने की क्षमता रखता है। जर्मनी के संयुक्त संचालन कमान (Joint Operations Command) के प्रमुख सोल्क्रैंक ने जर्मन मीडिया को दिए इंटरव्यू में कहा कि रूस की मौजूदा सैन्य तैयारियों से संकेत मिलता है कि अगर परिस्थितियां प्रतिकूल हुईं या पश्चिमी देशों के दबाव में रूस को खतरा महसूस हुआ, तो वह तुरंत सीमित भू-भाग में हमला करने का फैसला कर सकता है। उन्होंने कहा, "रूस के पास इतनी सैन्य क्षमता है कि वह कल से ही नाटो क्षेत्र पर एक छोटा और तीव्र हमला शुरू कर सकता है। हालांकि, फिलहाल वह यूक्रेन युद्ध में उलझा हुआ है, इसलिए

किसी भी संभावित कार्रवाई का दायरा सीमित होगा।" जनरल सोल्क्रैंक ने यह भी चेतावनी दी कि रूस यदि अपने रक्षा उद्योग में मौजूदा तेजी को बरकरार रखता है और हथियार उत्पादन को और बढ़ाता है, तो वर्ष 2029 तक वह 32 सदस्यीय नाटो गठबंधन के खिलाफ बड़े पैमाने पर युद्ध छेड़ने की क्षमता प्राप्त कर सकता है। "यूक्रेन युद्ध ने रूस को रणनीतिक रूप से कमजोर किया है, लेकिन उसने अपने रक्षा उद्योग को युद्ध मोड में परिवर्तित कर लिया है। इसका मतलब है कि आने वाले वर्षों में वह एक बार फिर अपनी सैन्य ताकत पुनर्स्थापित कर सकता है," उन्होंने कहा। सोल्क्रैंक के अनुसार, रूस की वायुसेना और मिसाइल क्षमता अभी भी बेहद शक्तिशाली है। "रूस की थलसेना को भारी नुकसान पहुंचा है, परंतु उसकी वायुसेना और लंबी दूरी की मिसाइलें अब भी यूरोप के लिए गंभीर खतरा हैं। पुतिन की सरकार का लक्ष्य 15 लाख सैनिकों की स्थायी सेना तैयार करना है, और उनके पास अभी भी पर्याप्त टैंक और बख्तरबंद वाहन हैं, जिससे वे किसी सीमित सैन्य कार्रवाई को अंजाम दे सकते हैं।" उन्होंने आगे कहा कि रूस के किसी भी संभावित सैन्य कदम का निर्धारण तीन प्रमुख तत्वों से होगा — उसकी मौजूदा युद्धक क्षमता, यूक्रेन युद्ध से सीखे गए सबक, और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की नेतृत्व नीति। उन्होंने यह भी कहा कि नाटो देशों को इस समय रणनीतिक एकता और संसाधनों के समुचित समन्वय की आवश्यकता है, ताकि किसी भी संभावित खतरे का मुकाबला किया जा सके। जनरल सोल्क्रैंक वर्ष 2024 से जर्मनी के संयुक्त संचालन कमान के प्रमुख हैं और इससे पहले वे उल्म शहर में नाटो की "लॉजिस्टिक्स कमांड जेसेक" का नेतृत्व कर चुके हैं। उनकी यह चेतावनी ऐसे समय में आई है जब रूस-यूक्रेन युद्ध तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुका है और पुतिन लगातार नाटो देशों पर अपने क्षेत्र में हस्तक्षेप का आरोप लगा रहे हैं।

ट्रंप ने दिए संकेत, अगले साल भारत यात्रा पर आ सकते हैं — मोदी को बताया "दोस्त और बेहतरीन व्यक्ति"

(जीएनएस)। वाशिंगटन। अमेरिका और भारत के बीच बढ़ते रणनीतिक और आर्थिक संबंधों के बीच राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संकेत दिया है कि वे अगले साल भारत की यात्रा कर सकते हैं। व्हाइट हाउस में गुरुवार को संवाददाताओं से बातचीत के दौरान ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करते हुए उन्हें "एक सच्चे दोस्त" और "बेहतरीन व्यक्ति" बताया। उन्होंने कहा कि भारत के साथ व्यापार समझौते पर बातचीत सही दिशा में आगे बढ़ रही है और दोनों देशों के बीच आपसी विश्वास पहले से कहीं अधिक मजबूत हुआ है।

ट्रंप ने कहा, "हम भारत के साथ बहुत अच्छे संबंधों में हैं। प्रधानमंत्री मोदी एक शानदार व्यक्ति हैं। हम व्यापार और ऊर्जा सहयोग पर काम कर रहे हैं और मैं भारत जाऊंगा — यह एक अद्भुत देश है।" उन्होंने यह भी जोड़ा कि इस यात्रा की तैयारी चल रही है और इसके अगले साल होने की संभावना है।

भारत और अमेरिका के बीच पिछले कुछ महीनों में व्यापार वार्ता फिर से सक्रिय हुई है। इस साल की शुरुआत में ट्रंप प्रशासन ने भारत पर 50 प्रतिशत तक आयात शुल्क लगाया था, जिसमें 25 प्रतिशत शुल्क रूस से तेल और हथियार खरीदे जाने के विरोध

में शामिल था। ट्रंप का आरोप था कि भारत की खरीद से रूस को यूक्रेन युद्ध जारी रखने में आर्थिक मदद मिल रही है। हालांकि भारत ने इस आरोप को सिरे से खारिज किया है और बार-बार कहा है कि उसकी तेल खरीद पूरी तरह आर्थिक और राष्ट्रीय हितों पर आधारित है।

ट्रंप ने संवाददाताओं से कहा, "भारत ने अब काफी हद तक रूसी तेल की खरीद बंद कर दी है, और यह एक सकारात्मक कदम है। हम दोनों देशों के बीच व्यापार और ऊर्जा साझेदारी को और मज़बूत करने पर काम कर रहे हैं।"

उनका यह बयान ऐसे समय आया है जब भारत इस वर्ष "क्वाड" शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। यह चार देशों—भारत, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया—का एक रणनीतिक मंच है, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ाने पर केंद्रित है। ट्रंप की भारत यात्रा इसी सम्मेलन से जुड़ी संभावनाओं के बीच देखी जा रही है।

भारत, रूस से तेल आयात के मामले में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा आयातक देश है। हालांकि हाल के महीनों में भारत ने रूस से आयात घटाकर अन्य स्रोतों, विशेषकर अमेरिका और मध्य-पूर्व के देशों से तेल खरीद पर ध्यान केंद्रित किया है।

दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध भी लगातार प्रगाढ़ हो रहे हैं। बीते वर्ष भारत-अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार 190 अरब डॉलर के आंकड़े को पार कर गया, जिससे अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया। ट्रंप प्रशासन का लक्ष्य है कि यह व्यापार अगले कुछ वर्षों में 500 अरब डॉलर तक पहुंचे।

विशेषज्ञों का मानना है कि अगर ट्रंप की भारत यात्रा अगले साल होती है, तो यह दोनों देशों के बीच व्यापार, रक्षा, और इंडो-पैसिफिक रणनीति के क्षेत्रों में साझेदारी को नई गति दे सकती है।

रूस में खतरनाक मोर्चे पर फंसे 44 भारतीय, विदेश मंत्रालय ने दी कड़ी चेतावनी— झूठी नौकरियों के जाल से रहें सतर्क

(जीएनएस)। नई दिल्ली। विदेश मंत्रालय ने भारतीय नागरिकों को सख्त चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि रूस की सेना में नौकरी के नाम पर चल रहा धोखाधड़ी का नेटवर्क न केवल अवैध है, बल्कि इससे भारतीयों की जान को भी गंभीर खतरा हो सकता है। मंत्रालय ने बताया कि वर्तमान में 44 भारतीय नागरिक रूसी सेना में तैनात हैं, जिनकी सुरक्षा और वापसी सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार उच्च स्तर पर लगातार प्रयास कर रही है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को नियमित प्रेस वार्ता में कहा कि रूस में रोजगार देने के नाम पर कुछ एजेंट भारतीयों को बहला-फुसलाकर सैनिक सेवाओं में भर्ती करा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इन भारतीयों को झूठे वादों और आकर्षक पैकेजों के जरिये यह विश्वास दिलाया गया कि वे गैर-लड़ाकू भूमिकाओं में काम करेंगे, लेकिन बाद में उन्हें सीधे युद्धक्षेत्रों में भेज दिया गया। जायसवाल ने कहा कि रूस की सेना में शामिल इन भारतीयों का जीवन गंभीर संकट में है, और भारत सरकार ने रूस से औपचारिक रूप से मांग की है कि सभी भारतीयों को तत्काल सेवा से मुक्त किया जाए और उनकी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि रूस में मौजूद भारतीय राजनयिक लगातार रूसी रक्षा मंत्रालय से संवाद कर रहे हैं। भारतीय दूतावास वहां इन सैनिकों के परिवारों के संपर्क में है और हर संभव मदद की जा रही है। जायसवाल ने स्पष्ट कहा, "हमारा उद्देश्य इन सभी 44 भारतीय नागरिकों को जल्द से जल्द स्वदेश वापस लाना है। साथ ही हमने रूस से यह भी आग्रह किया है कि भविष्य में किसी भी भारतीय नागरिक की सैन्य सेवाओं में भर्ती पूरी तरह रोकी जाए।"

विदेश मंत्रालय ने नागरिकों को आगाह किया है कि किसी भी अनजाने या निजी एजेंसी के माध्यम से मिली विदेशी नौकरी के प्रस्ताव को स्वीकार करने से पहले उसकी वैधता की पूरी जांच करें। जायसवाल ने कहा कि ऐसे कई मामले सामने आए हैं जहां लोगों को पर्यटक या श्रमिक वीजा पर बुलाकर फिर उन्हें युद्धक्षेत्र में भेज दिया गया। उन्होंने कहा, "विदेशों में रोजगार के नाम पर चल रहे ऐसे छलावे न केवल आर्थिक ठगी हैं, बल्कि जीवन को दांव पर लगाने वाले जाल भी हैं। सरकार का आग्रह है कि कोई भी व्यक्ति ऐसी संदिग्ध पेशकश का शिकार न बने।" इस बीच प्रवक्ता ने एक अन्य मानवीय राहत अभियान का भी उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि म्यांमार में अवैध कॉल सेंटरों में फंसे 270 भारतीय नागरिकों को थाईलैंड के रास्ते स्वदेश वापस लाया गया है। जायसवाल ने कहा कि ये सभी लोग मानव तस्करी गिरोहों के झांसे में फंसकर म्यांमार पहुंचे थे, जहां से भागकर थाईलैंड पहुंचे। भारत सरकार ने थाई प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर इनकी नागरिकता सत्यापित करवाई और सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की।

भारत का कड़ा बयान: पाकिस्तान का इतिहास गुप्त और अवैध परमाणु प्रसार से भरा हुआ है

(जीएनएस)। नई दिल्ली। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को पाकिस्तान के कथित परमाणु परीक्षण को लेकर अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पाकिस्तान का पूरा इतिहास गुप्त, अवैध और संदिग्ध परमाणु गतिविधियों से भरा पड़ा है। मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने स्पष्ट कहा कि इस्लामाबाद ने दशकों से वैश्विक नियमों की अवहेलना करते हुए परमाणु तकनीक के गुप्त व्यापार, तस्करी और प्रसार को बढ़ावा दिया है।

प्रवक्ता ने साप्ताहिक प्रेस ब्रीफिंग में कहा कि पाकिस्तान की परमाणु नीति का अतीत अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था के लिए लगातार खतरा रहा है। उन्होंने कहा, "यह देश लंबे समय से गुप्त साझेदारियों, तस्करी नेटवर्क, निर्यात नियंत्रणों के उल्लंघन और अवैध परमाणु प्रसार से जुड़ा रहा है। ए.क्यू. खान नेटवर्क इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जिसने उत्तर कोरिया, ईरान और अन्य देशों को संवेदनशील परमाणु तकनीक पहुंचाने में भूमिका निभाई थी।"

भारत ने कई बार अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है कि पाकिस्तान की परमाणु गतिविधियां केवल क्षेत्रीय नहीं बल्कि वैश्विक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती हैं। प्रवक्ता ने कहा कि पाकिस्तान का यह रवैया उसकी पुरानी नीति का हिस्सा है, जो पारदर्शिता और अंतरराष्ट्रीय जिम्मेदारी से हमेशा दूर रहा है। भारत ने डोनाल्ड ट्रंप की उस टिप्पणी को भी गंभीरता से लिया है, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि पाकिस्तान ने हाल ही में परमाणु परीक्षण किए हैं। हालांकि विदेश मंत्रालय ने इस पर अधिक प्रतिक्रिया देने से परहेज करते हुए कहा कि भारत इस बयान को नोट कर चुका है और स्थिति पर नजर रखे हुए है।

रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत ने हमेशा जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और नियंत्रण व्यवस्थाओं का पालन किया है, जबकि पाकिस्तान का रवैया इसके ठीक विपरीत रहा है। उन्होंने दोहराया कि भारत अंतरराष्ट्रीय शांति और स्थिरता के लिए प्रतिबद्ध है और परमाणु प्रसार की किसी भी गतिविधि का कड़ा विरोध करता है।

इस दौरान जी20 शिखर सम्मेलन को लेकर पूछे गए प्रश्न पर प्रवक्ता ने स्पष्ट किया कि भारत इस महत्वपूर्ण बैठक का सदस्य देश है और हमेशा की तरह सक्रिय रूप से इसमें भाग लेगा। हालांकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की इसमें भागीदारी को लेकर प्रवक्ता ने कोई टिप्पणी करने से इनकार किया और कहा कि यह निर्णय अमेरिका का आंतरिक मामला है। विदेश मंत्रालय का यह बयान न केवल पाकिस्तान की परमाणु नीति पर कड़ा प्रहार है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह संदेश भी देता है कि भारत आतंकवाद और परमाणु प्रसार, दोनों मोर्चों पर जिम्मेदारी और पारदर्शिता के साथ वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सांसद के खाते पर साइबर हमला: TMC नेता कल्याण बनर्जी के बैंक अकाउंट से ठगों ने उड़ा दिए 55 लाख रुपये, केवाईसी चोरी से रची गई साजिश का खुलासा

(जीएनएस)। कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के वरिष्ठ सांसद कल्याण बनर्जी साइबर ठगों के निशाने पर आ गए हैं। बेहद चौंकाने वाले मामले में उनके बैंक खाते से 55 लाख रुपये की मोटी रकम गायब हो गई। यह घटना न

केवल राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा रही है, बल्कि यह भी दिखाती है कि साइबर अपराधी अब कितने संगठित और तकनीकी रूप से कुशल हो चुके हैं।

मामले की जानकारी मिलते ही सांसद कल्याण बनर्जी ने तुरंत कोलकाता पुलिस के साइबर क्राइम सेल में शिकायत दर्ज करवाई। प्रारंभिक जांच में यह खुलासा हुआ है कि ठगों ने सांसद के एक पुराने बैंक खाते के केवाईसी (KYC) विवरण को हैक करके इस पूरी साजिश को अंजाम दिया। जांचकर्ताओं के अनुसार, जिस खाते से रुपये ट्रांसफर किए गए, वह वह खाता था जिसे बनर्जी ने काफी समय से उपयोग में नहीं लिया था। लेकिन साइबर अपराधियों ने किसी तरह उस निष्क्रिय खाते की केवाईसी जानकारी तक पहुंच बना ली। उन्होंने उन जानकारियों का इस्तेमाल कर सांसद के दूसरे सक्रिय बैंक खाते से पैसे ट्रांसफर किए। सूत्रों का कहना है कि ठगों ने पहले पुराने खाते की पुनः सक्रियता से जुड़ी प्रक्रिया में बदलाव किया, जिससे वे ऑनलाइन एक्सेस प्राप्त कर सके। फिर उन्होंने सांसद के एक सक्रिय खाते से रकम निकालकर उस पुराने खाते में ट्रांसफर की और कुछ ही घंटों के भीतर कई हिस्सों में उसे निकाल लिया। जब सांसद को अपने खाते में अचानक बड़ी रकम की कमी दिखाई दी, तब उन्होंने बैंक से संपर्क किया। बैंक अधिकारियों ने तुरंत खाते को फ्रीज किया, लेकिन तब तक लगभग 55 लाख रुपये अलग-अलग खातों में भेजे जा चुके थे। कोलकाता पुलिस के साइबर विशेषज्ञ अब यह जांच कर रहे हैं कि यह पूरी ठगी किस तरह से अंजाम दी गई — क्या इसमें बैंकिंग नेटवर्क के अंदर किसी की मिलीभगत थी या यह पूरी तरह बाहरी डिजिटल हैकिंग का मामला है। पुलिस ने ट्रांजैक्शन के आईपी एड्रेस, ट्रांजैक्शन चैनल्स और ईमेल/एसएमएस लॉग की जांच शुरू कर दी है।

सांसद कल्याण बनर्जी ने इस घटना पर गहरी चिंता जताते हुए कहा,

"यह केवल मेरे साथ नहीं, बल्कि हर नागरिक के लिए एक चेतावनी है। आज के समय में बैंकिंग सिस्टम में कितनी भी सुरक्षा व्यवस्था क्यों न हो, साइबर ठग किसी न किसी छिद्र से घुस जाते हैं। यह केवल पैसे की चोरी नहीं, बल्कि सिस्टम पर हमला है।"

जानकारी के अनुसार, जिस बैंक में सांसद का खाता था, वहां से भी आंतरिक जांच शुरू कर दी गई है। बैंक ने कहा है कि ग्राहक की राशि सुरक्षित रखने की हर संभव कोशिश की जा रही है और आवश्यक रिपोर्ट रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) को भी भेजी जाएगी।

साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों ने इस घटना को "फिशिंग और केवाईसी मैनिपुलेशन" का मिला-जुला केस बताया है। विशेषज्ञों के मुताबिक, यह संभव है कि ठगों ने पहले सांसद के नाम पर फर्जी ईमेल या कॉल के जरिए उनके बैंक डिटेल्स हासिल किए हों, फिर पुराने खाते की जानकारी का इस्तेमाल करते हुए एक सटीक धोखाधड़ी की योजना बनाई हो।

संपादकीय

आत्मघात की मजबूरी

यह तथ्य हृदयविदारक ही है कि देश में एक साल के दौरान करीब चौदह हजार छात्रों ने आत्महत्या की। पहली नजर में आत्मघात के मूल में पढ़ाई का दबाव, छात्रों की संवेदनशीलता और तंत्र की नाकामी बताई जा सकती है। लेकिन सवाल है कि हमारा तंत्र क्यों संवेदनहीन बना हुआ है? यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को तलब करके इस बाबत विस्तृत विवरण मांगा है। साथ ही सवाल पूछा है कि क्या देश के सभी शिक्षण संस्थान छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदारी निभा रहे हैं? विडंबना यह है कि देश में मोटी पगार वाली नौकरियों की गलाकाट स्पर्धा में शिक्षण संस्थाएं व शिक्षक उस दायित्व को भूल गए हैं, जो छात्रों को विषयगत शिक्षा के साथ विषम परिस्थितियों के बीच जीवन जीने की कला सिखा सके। उन्हें व्यावहारिक जीवन का कौशल सिखाने के साथ ही चुनौतियों से जूझने की मानसिक शक्ति विकसित करने के लिए तैयार कर सकें। आखिर किसी परिवार की उम्मीद को किस स्थिति में यह सोचना पड़ता है कि मौत को गले लगाना अंतिम विकल्प है? शिक्षा परिसरों में ऐसी स्थितियां क्यों विकसित हो रही हैं कि विद्यार्थी जीवन से हार मानने लगे हैं? निस्संदेह, शिक्षण संस्थानों का एक मात्र लक्ष्य किताबी ज्ञान देकर डिग्री बांटने तक ही नहीं हो सकता। शिक्षण संस्थानों के प्रबंधन तंत्र को अपने परिसर में समता, ममता और सहजता का वातावरण तैयार करना होगा। जहां किसी भी तरह तनाव, मानसिक कष्ट व भेदभाव नजर न आए और कारगर शिकायत निवारण तंत्र विकसित हो। ऐसा न होने पर ही सरस्वती के मंदिरों में तनाव की फसल उग रही है। हमारे नीति-नियंता इस दुखदायी स्थिति पर अंकुश लगाने हेतु किसी तरह की गंभीर पहल करते नजर नहीं आते। यदि गाल बजाने वाले राजनेता कोई कदम उठाने की लोकलुभावनी घोषणा करते भी हैं तो भी जमीनी हकीकत बदलती नजर नहीं आती। घोषणाएं प्रभावी भी होनी चाहिए।

सवाल यह भी है कि शैक्षणिक परिसरों में आत्महत्या रोकने के लिये जो कदम केंद्र व राज्य सरकारों को उठाने चाहिए थे, उसके बाबत देश की शीर्ष अदालत को क्यों पहल करनी चाहिए? इस मामले में सख्त रवैया अपनाते हुए सर्वोच्च न्यायालय को कहना पड़ा कि केंद्र व राज्य सरकारें आठ सप्ताह के भीतर वह विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत करें, जो आत्महत्या रोकने के दिशा-निर्देशों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करे। दुखद स्थिति यह भी है कि देश में छात्रों के आत्मघात के मामले लगातार बढ़ रहे हैं, इसकी पुष्टि खुद राष्ट्रीय अपराध रेकॉर्ड ब्यूरो भी कर रहा है। जो साल 2023 में देश की शिक्षण संस्थाओं में 13,892 छात्रों की मौत को गले लगाने की बात स्वीकार करता है। सबसे दुखद स्थिति यह है कि यह संख्या पिछले एक दशक में पैंसठ प्रतिशत बढ़ी है। वहीं इस आंकड़े की तुलना यदि वर्ष 2019 से करें तो यह वृद्धि चौंतीस फीसदी दर्ज की गई है। जाहिर बात है कि यह वृद्धि छात्रों की मानसिक पीड़ा, हताशा और भविष्य के प्रति निराश होने की स्थिति को ही दर्शाती है। निश्चित रूप से हमारी शिक्षा की विसंगतियां भी इन आत्महत्याओं के मूल में हैं। देश में भाषा व बोर्ड स्तर पर पाठ्यक्रम व शिक्षण की स्थिति में खासा अंतर है। पैसे वालों के बच्चे महंगे स्कूलों में पढ़ते हैं। रही-सही कसर उनके महंगे कोचिंग सेंटरों द्वारा पूरी की जाती है। हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की सारी ऊर्जा अपने ज्ञान को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करने में चली जाती है। कालांतर में वे उच्च शिक्षा संस्थानों में हीनग्रंथि का शिकार हो जाते हैं। ऐसी तमाम ग्रंथियां छात्रों को अपराधबोध से भर देती हैं। पढ़ाई के दबाव के अलावा शिक्षा संस्थानों के परिसर में हिंसा और जातिगत भेदभाव की खबरें भी आती हैं जो संवेदनशील छात्रों को हताशा से भर देती हैं। निश्चय ही सजगता व संवेदनशीलता से ऐसी परिस्थितियों से छात्रों को बचाया सकता है। यही वजह है कि देश की शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में शिक्षण संस्थानों और सरकार को जरूरी दिशानिर्देश दिए हैं। निस्संदेह, देश के युवाओं में आत्मघात की प्रवृत्ति राष्ट्र की गंभीर क्षति है, जिसे संवेदनशील ढंग से दूर करने की तत्काल जरूरत है।

वंदेमातरम् राष्ट्रीय गीत की 150 वीं वर्षगांठ

“आनंदमठ की रचना की वह रात्रि जब वंदे मातरम् जन्मा”

स्वतंत्र भारत में जब राष्ट्रगान तय किया गया, तब “वंदे मातरम्” और “जन गण मन” दोनों पर विचार हुआ। अंततः “जन गण मन” को राष्ट्रगान घोषित किया गया, पर “वंदे मातरम्” को राष्ट्रीय गीत (**National Song**) का दर्जा मिला क्योंकि वह भारतीय आत्मा की भावनाओं का प्रतीक था।

कुश मेहता
(स्वतंत्र पत्रकार)
साबरमती तट,
अहमदाबाद
(गुजरात)

बंगाल के एक छोटे से कस्बे में, डिप्टी मजिस्ट्रेट बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय अपने सरकारी आवास में बैठे थे।

टेबल पर कुछ कागज़ फैले थे, पास में दीपक टिमटिमा रहा था,और बाहर शरद की हवा में हिलते वृक्षों की शाखाएँ जैसे कोई गीत गा रही थीं।

पर उस रात का गीत कोई सामान्य गीत नहीं था —

वह भारतमाता की आत्मा की पुकार थी,

जो बंकिमचंद्र जी के हृदय में उतर रही थी

दिनभर वे ‘आनंदमठ’ के कथानक पर सोचते रहे थे।

उनके मन में एक कथा थी संन्यासियों की, जो तलवार उठाते हैं विदेशी अत्याचार के विरुद्ध!

पर वह कथा अधूरी थी,उन्हें महसूस हुआ — इस कथा को शक्ति चाहिए, भाव चाहिए, प्राण चाहिए!

वे खिड़की से बाहर देखने लगे।

रात्रि के मौन में उन्हें अपनी भूमि की गंध महसूस हुई —

गंगा की नमी, खेतों की हरियाली, हवा की ठंडक, वृक्षों की छाया —सबमें एक ही भावना थी — माँ!भारत मां!

अचानक उनके भीतर एक स्वर उठा —

धीमा, पर गूंजता हुआ —

“वंदे मातरम्!”

वे चौंके — यह शब्द उन्होंने न सोचा था, न लिखा था।

यह जैसे भीतर से किसी ने बोला हो।

उन्होंने कलम उठाई — और वही शब्द लिख दिए।

“वंदे मातरम्।”

एक पंक्ति लिखते ही उनकी आँखें नम हो गईं।

उनके चारों ओर का वातावरण जैसे बदल गया।

वह टेबल, वह दीपक, वह रात्रि —सब किसी दैवी उपस्थिति से भर गए।

उन्होंने अगली पंक्ति लिखी —

“सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,

शस्य श्यामलाम् मातरम्।”

शब्द बहने लगे, जैसे कोई संगीत अपने आप जन्म ले रहा हो। हर पंक्ति में भारत की मिट्टी, उसकी नदियाँ, उसके खेत, उसके फूल, उसके बच्चे सब गूंज उठे।

धीरे-धीरे पूरी कविता पूर्ण हुई।

और जब उन्होंने अंतिम बार “वंदे मातरम्” कहा,

तो लगा — यह उनकी नहीं, भारतमाता की वाणी है।

सुबह जब सूरज उगा,

बंकिमचंद्र ने अपनी आँखें बंद कर कहा “अब मेरा कर्तव्य पूर्ण हुआ।”

उन्हें क्या पता था कि यह कुछ पंक्तियाँ आने वाले सदी तक भारत के प्रत्येक आंदोलन, प्रत्येक बलिदान और प्रत्येक रणघोष की आत्मा बन जाएँगी।

वह रात केवल साहित्य की नहीं थी, वह आध्यात्मिक सृजन की रात थी। मां सरस्वती के आशीष की रात थी

बंकिमचंद्र जी ने उस रात कविता नहीं लिखी — उन्होंने एक संस्कार लिखा,

जो आने वाली पीढ़ियों की नसों में प्रवाहित हो गया।

“वंदे मातरम्” — यह दो शब्द मात्र नहीं थे, यह उस भारतभूमि का पहला राष्ट्रीय नाद था, जिसने सोए हुए राष्ट्र को उसकी अस्मिता का बोध कराया।

यह वह पुकार थी, जिसमें गुलामी की बेड़ियाँ टूटने लगीं और हर भारतीय के हृदय में स्वाधीनता की ज्वाला प्रज्वलित हुई।

वस्तुतः वन्देमातरम् बंकिम जी के उपन्यास आनन्द मठ के अंदर लिखा एक गीत है जो अजर अमर हो गया

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (1838–1894) न केवल एक महान साहित्यकार थे, बल्कि राष्ट्रजागरण के अग्रदूत भी थे। 1905 में बंग-भंग के समय जब राष्ट्र दो हिस्सों में बाँटने की साज़िश हुई, तो यह गीत बंगाल से लेकर पंजाब तक, और मद्रास से लेकर गुजरात तक क्रांति का गान बन गया।हर जुलूस, हर सत्याग्रह, हर बलिदान से पहले “वंदे मातरम्” की गूँज होती थी।

यही कारण था कि लाला लाजपत राय, अरविंद घोष, बाल गंगाधर तिलक, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, गणेशशंकर विद्यार्थीऔर यहाँ तक कि गांधीजी तक — सभी ने इसे भारतीयों की आत्मा की आवाज़ कहा।

“वंदे मातरम्” ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को दिशा दी, और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय को ‘भारत का राष्ट्रगायक’ बना दिया।

1838 में बंगाल के कंथलपाड़ा (नैहाटी) में जन्मे बंकिमचंद्र भारत के पहले भारतीय ICS अधिकारी थे।

परंतु अंग्रेज़ी शासन की निकटता ने उन्हें यह अनुभव कराया कि भारत को केवल प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि मानसिक स्वतंत्रता चाहिए।

उन्होंने साहित्य को साधन बनाया और अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में नवचेतना भर दी।

उनके उपन्यास — आनंदमठ, विषवृक्ष, देवी चौधरानी, कृष्णकांतर विल — सभी में देशभक्ति, नारीशक्ति और आत्मगौरव की भावना मुखर है।

‘आनंदमठ’ में उन्होंने साधुओं की एक ऐसी कथा रची जो विदेशी सत्ता के विरुद्ध खड़ी होती है — और उसी कथा में “वंदे मातरम्” जन्म लेता है।

स्वतंत्र भारत में जब राष्ट्रगान तय किया गया, तब “वंदे मातरम्” और “जन गण मन” दोनों पर विचार हुआ।

अंततः “जन गण मन” को राष्ट्रगान घोषित किया गया, पर “वंदे मातरम्” को राष्ट्रीय गीत (National Song) का दर्जा मिला — क्योंकि वह भारतीय आत्मा की भावनाओं का प्रतीक था।

संविधान सभा में नेहरूजी, पट्टाभि सीतारमैया, और रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा “वंदे मातरम् हमारे स्वाधीनता संग्राम का आत्मा का स्वर है।”

आज भले ही स्वतंत्रता को दशकों बीत गए हों, पर “वंदे मातरम्” की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही जीवंत है।

यह गीत हमें स्मरण कराता है कि राष्ट्रभक्ति केवल भाषण नहीं, बल्कि मातृभूमि के प्रति आस्था का भाव है।

जब कोई युवा “वंदे मातरम्” उच्चारित करता है, तो वह अपने भीतर की शक्ति को पहचानता है —

कि वह उसी धरती का पुत्र है, जिसने अनगिनत बलिदानों से आज़ादी पाई है।

वंदे मातरम्” भारतमाता की प्रकृति, शक्ति, और करुणा तीनों रूपों की आराधना है।यह गीत कहता है कि हमारी भूमि ही हमारी माता है — जो हमें जल, अन्न, वायु, सौंदर्य, ज्ञान, बल और आशीर्वाद देती है।

इसमें भक्ति भी है, देशप्रेम भी, और मातृभाव भी।

कहने की आवश्यकता नहीं आज भी इस गीत का सुनना और गुनगुनाना देश प्रेम के बलिदानी के लिए रोम रोम

पुलकित कर देता है।

इस गीत के सम्मान के लिए इतना ही कहना काफी है,

“जहाँ तलवार मौन हो जाए, वहाँ कलम बोलनी चाहिए।”

वंदे मातरम् के आज 150 वीं वर्षगांठ पर भारत मां के उस महान सपूत को कोटि कोटि प्रणाम!

प्रेरणा

शौर्य की देवी और रणभूमि का अमर प्रेम

राजस्थान की तपती रेत, ऊँटों की घंटियाँ और तलवारों की झंकार के बीच वीरता का इतिहास जैसे हर कण में बसा हुआ है। यह वही धरती है जहाँ नारी का सौंदर्य उसके आभूषणों में नहीं, बल्कि उसके साहस में झलकता है। ऐसी ही एक कथा है उस वीरांगना की, जिसने अपने प्रेम को बलिदान में रूपांतरित कर दिया और अपने पति को रणभूमि में अजेय बना दिया। यह कहानी है एक ऐसी स्त्री की जो स्वयं तो नारी थी, पर भीतर से सिंहनी थी — और एक ऐसे पति की, जिसने अपने शौर्य से यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा प्रेम वही होता है, जो कर्तव्य से ऊपर नहीं जाता।

चूण्डावत वंश का सेनानायक युद्ध की तैयारी में था। देश पर संकट था, सीमाओं पर दुश्मन डेरा डाल चुके थे। रणभेरी बज चुकी थी, पर सेनानायक का मन विचलित था। कुछ ही दिन पहले उसका विवाह हुआ था। हवेली में अभी भी विवाह की सुगंध फैली हुई थी — आँगन में मेंहदी की खुशबू, झरोखों पर रंगीन परदे, और दुल्हन की चूड़ियों की खनक। पर अब उसे सब कुछ छोड़कर रणभूमि में जाना था।

उसके मन में एक गहरा द्वंद्व था। तलवार हाथ में थी, पर हृदय मोह से भरा हुआ था। तभी उसकी नवविवाहिता पत्नी उसके पास आई। उसकी आँखों में आँसू नहीं, बल्कि अपूर्व तेज़ था। उसने पति के हाथों से तलवार ली, उसकी धार को माथे से लगाया और बोली — “स्वामी, यह तलवार अब मेरी नहीं, मातृभूमि की है। जाइए, यह समय प्रेम का नहीं, धर्म का है। यदि आप लौटे तो आपके चरणों में फूल बिछाऊँगी, यदि नहीं लौटे तो आपकी शौर्यगाथा अपने हृदय में लेकर जीवन भर जीऊँगी।”

उसके शब्दों में कोई शिकायत नहीं थी। वह जानती थी कि एक वीर का जीवन केवल एक स्त्री का नहीं होता, बल्कि पूरी धरती का होता है। सेनानायक ने माथे पर विजय का तिलक लगाया, पत्नी की आरती स्वीकार की और घोड़े पर सवार होकर रणभूमि की ओर चल पड़ा।

सेना संग चलते हुए उसने आख़िरी बार झरोखे की ओर देखा। उसकी पत्नी वहाँ खड़ी थी — श्वेत वस्त्रों में, शांत, पर गर्व से भरी हुई। सेनानायक का हृदय भर आया। उसने अपने दूत को बुलाया और कहा, “मेरी सेहनाणी से कोई स्मृति-चिह्न लाओ, जो मुझे युद्ध में प्रेरणा दे।”

दूत संदेश लेकर झरोखे तक पहुँचा। जब पत्नी ने यह सुना, तो वह क्षणभर के लिए मौन रह गई। वह समझ गई कि उसका पति अभी भी प्रेम के मोह से मुक्त नहीं हुआ। उसके भीतर की सिंहनी जाग उठी। उसने देवी दुर्गा की प्रतिमा के आगे सिर झुकाया, प्रार्थना की — “मुझे वह शक्ति दो कि मैं अपने स्वामी को वीर बना सकूँ।” फिर उसने तलवार उठाई, और बिना किसी हिचकिचाहट के अपना सिर काट दिया।

वह सिर दूत को थमा दिया और कहा, “यह रहा मेरा स्मृति-चिह्न। उसे कहना — अब तुम्हारी संगिनी तुम्हारे संग रणभूमि में रहेगी, तुम्हारे हृदय में, तुम्हारी गरदन पर। अब कोई मोह नहीं, केवल विजय।”

जब सेनानायक ने अपनी पत्नी का सिर देखा, तो उसका शरीर कांप उठा, पर अगले ही क्षण उसकी आँखों में ज्वाला भड़क उठी। उसने उस सिर को अपनी गरदन में बालों की वेणी से बाँध लिया। फिर तलवार उठाई, और गर्जना की — “अब यह युद्ध केवल भूमि के लिए नहीं, उस नारी के अमर प्रेम के लिए भी होगा जिसने मुझे वीर बनने का आशीर्वाद दिया।”

युद्ध का बिगुल बजा। तलवारें टकराईं, घोड़े दहाड़े, और रक्त से धरती लाल हो गई। सेनानायक ने शत्रुओं पर ऐसा प्रहार किया कि दुश्मन दल बिखर गया। उसकी तलवार एक क्षण भी नहीं थमी। हर वार में उसकी पत्नी की प्रेरणा थी, हर गर्जना में उसकी नारी का बलिदान।

जब सूर्य अस्त हुआ, तब रणभूमि पर केवल एक छवि चमक रही थी — सेनानायक की, जिसकी गर्दन पर उसकी पत्नी का सिर बंधा था। वह दृश्य ऐसा था जिसने पूरी धरती को मौन कर दिया। लोगों ने कहा — “यह युद्ध नहीं, यह प्रेम की पूजा थी। यह वह बलिदान था जो देवत्व से भी ऊँचा है।”

चूण्डावत का नाम इतिहास में वीरता के रूप में दर्ज हुआ, पर उसकी पत्नी का नाम “अमर प्रेम” के प्रतीक के रूप में अमर हो गया। उसने सिद्ध कर दिया कि नारी केवल गृहिणी नहीं, वह प्रेरणा की मूर्ति है। वह अपने त्याग से पुरुष को अमर बना देती है, और उसके शौर्य में स्वयं का अमरत्व खोज लेती है।

राजस्थान की रेत आज भी जब हवा के संग गूंजती है, तो मानो कहती है — “जहाँ प्रेम कर्तव्य बन जाए, और बलिदान आभूषण — वही धरती मेवाड़ की है, वही नारी सच्ची देवी है।”

वन्दे मातरम् के 150 वर्ष: राष्ट्रभक्ति का स्वर, एकता का उत्सव

भारत का राष्ट्रीय गीत ‘वन्दे मातरम्’ इस वर्ष अपनी रचना के 150वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। 7 नवम्बर 2025 का यह दिन केवल एक गीत की वर्षगांठ नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय चेतना का उत्सव है जिसने सोए हुए भारत को जगाया था। यह गीत शब्दों से परे एक भावना है—भक्ति और स्वाधीनता का संगम, जिसने पराधीनता की घोर अंधेरी रात में आशा का दीप प्रज्वलित किया। ‘वन्दे मातरम्’ वह स्वर है जो साहित्य से आगे बढ़कर भारत की आत्मा बन गया, जिसने जन-जन के हृदय में यह विश्वास जगाया कि मातृभूमि ही सर्वोच्च आराध्या है—और उसकी सेवा, जीवन का सबसे पवित्र धर्म। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अवसर पर ‘मन की बात’ में कहा—“वन्दे मातरम्... इसमें कितनी भावनाएँ, कितनी ऊर्जा समाई है। यह हमें माँ भारती के मातृत्व का अनुभव कराता है। यह हमारे हृदय की तरंगों का उद्गार है, एक ऐसा मंत्र जो 140 करोड़ भारतीयों को एकता की ऊर्जा से जोड़ता है।” उन्होंने देशवासियों से #VandeMataram150 अभियान के माध्यम से इसे जन-जन का उत्सव बनाने का आह्वान किया।

‘वन्दे मातरम्’ दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है। ‘वन्दे’ शब्द संस्कृत धातु ‘वन्द्’ से निकला है, जिसका अर्थ है — स्तुति करना, नमन करना या सम्मानपूर्वक प्रणाम करना। यह धातु ऋग्वेद मंडल 10, सूक्त 151, मन्त्र 4 में मिलती है— “देवा वन्दे मनुष्याः।” (अर्थात् — मनुष्य देवताओं की वन्दना करते हैं।) यहाँ “वन्दे” शब्द का प्रयोग प्रणाम और स्तुति के भाव में हुआ है। ‘मातरम्’ शब्द का अर्थ ‘माँ’ या ‘जननी’ है, जो यहाँ मातृभूमि अर्थात् भारत माता के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार ‘वन्दे मातरम्’ का अर्थ है — “हे माँ, तुझे प्रणाम।” यह केवल एक भाषिक संरचना नहीं, बल्कि भारतीय चेतना की गहराई में निहित मातृभक्ति, श्रद्धा और देशप्रेम का अमर प्रतीक है।

1870 के दशक में बंगाल के महान साहित्यकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने ‘वन्दे मातरम्’ लिखा। इसे उन्होंने 7 नवम्बर 1875 को अपने प्रसिद्ध उपन्यास ‘आनंदमठ’ (1882) में शामिल किया। यह गीत संस्कृत और बंगला—दोनों भाषाओं में लिखा गया था। संगीतकार जदुनाथ भट्टाचार्य ने इसे राग देश में स्वरबद्ध किया। वन्दे मातरम् बंकिमचंद्र की मातृभूमि के प्रति गहरी आस्था का प्रतीक था। उन्होंने इसमें भारत की नदियों, खेतों, फसलों और वनों को देवी के रूप में देखा—माँ दुर्गा, जो पालक भी है, रक्षक भी।

1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सर्वप्रथम ‘वन्दे मातरम्’ को गाया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता एक मुस्लिम नेता रहीमतुल्ला मोहम्मद सयानी ने की थी। उस समय यह गीत पूरे सभागार में राष्ट्रभावना का संचार कर गया। इसकी प्रतिध्वनि दक्षिण भारत तक पहुंची — तमिल कवि सुब्रमण्य भारती ने इसे तमिल में गाया, और पंतलु ने इसे तेलुगु में रूपांतरित किया। परंतु दुखद यह है कि समय के साथ राजनीति ने इस गीत को ‘तुष्टिकरण राग’ में बदल दिया।

1901 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में दक्षिणरंजन सेन ने जब पियानो की धुन पर यह भजन गाया, तो उसकी गूंज पूरे सभागार में फैल गई। इसके बाद महात्मा गांधी ने Opinion पत्रिका में यह प्रस्ताव रखा कि वन्दे मातरम् को भारत का राष्ट्रगान घोषित किया जाए। गांधीजी ने लिखा—“यह गीत भारत की आत्मा है; इसे गाना अपने देश के प्रति कर्तव्य का पालन है।”

कांग्रेस के काकीनाडा अधिवेशन में जब प्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने ‘वन्दे मातरम्’ का गायन आरंभ किया, तो अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद जौहर अली ने आपत्ति जताई। 1906 में मुस्लिम लीग के गठन के साथ ही यह विरोध संगठित रूप लेने लगा और कहा गया कि यह गीत एकेश्वरवाद (Monotheism) के सिद्धांत के विपरीत है।

1937 में जब कांग्रेस की एक समिति गठित की गई, तो मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और सुभाषचंद्र बोस जैसे नेताओं ने यह मध्य मार्ग सुझाया। मौलाना आज़ाद ने कहा—“गीत के पहले दो पद पूर्णतः सांस्कृतिक और भौतिक वर्णन हैं; इन्हें राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।” इस पर 1937 में कांग्रेस ने आधिकारिक निर्णय लिया कि केवल पहले दो पद ही राष्ट्रगीत के रूप में मान्य होंगे।

1909 में श्री अरविन्द घोष ने इसका अंग्रेज़ी अनुवाद किया—“माँ, मैं तुझे प्रणाम करता हूँ”—जो कर्मयोगिन पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उन्होंने लिखा—“वन्दे मातरम् राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति थी। यह शीघ्र ही पूरे भारत में फैल गया और लाखों लोगों के होंठों पर गूंजने लगा।”

युवा क्रांतिकारी खुदीराम बोस, जिनकी उम्र मात्र 18 वर्ष थी, जब 1908 में फांसी पर चढ़े, तो उनके होंठों पर आख़िरी शब्द थे—“वन्दे मातरम्!” उनकी मुस्कराती तस्वीर और यह नारा देश के हर युवा के दिल में आग बन गया। अदालत में जब-जब भारतीय क्रांतिकारियों पर मुकदमे चले, वे जजों के सामने भी “वन्दे मातरम्” के नारे लगाते थे। ब्रिटिश कानून के तहत यह “राजद्रोह” माना गया, लेकिन यह नारा अब जनता का धर्म बन चुका था।

1906 में चित्रकार अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने “भारत माता” चित्र बनाया—चार हाथों वाली देवी, जिनके हाथों में पुस्तक, माला, वस्त्र और अन्न हैं—ज्ञान, श्रद्धा, वस्त्र और भोजन के प्रतीक। सिस्टर निवेदिता ने इस चित्र को देखकर कहा—“यह चित्र उस माँ की आत्मा का प्रतीक है जो अपने बच्चों को ज्ञान, श्रद्धा, वस्त्र और भोजन देती है।” यह चित्र और ‘वन्दे मातरम्’ दोनों उस काल की एक ही भावना का दृश्य और श्रव्य रूप बन गए—भारत माँ की पुकार।

‘वन्दे मातरम्’ की लोकप्रियता जितनी तेज़ी से बढ़ी, उतना ही विरोध भी बढ़ा। मुहम्मद अली जिन्ना ने इसका तीव्र विरोध किया। क़ायदे-आज़म पेपर्स (1938) में दर्ज है कि जिन्ना ने इसे “मूर्तिपूजक” बताया और कहा कि “यह गीत मुस्लिम समुदाय के लिए अस्वीकार्य है क्योंकि इसमें भारत को देवी के रूप में चित्रित किया गया है।

अभियान

भारत के पवित्र शिव मंदिर: जहां घंटी की ध्वनि में बसता है मोक्ष और शांति का नाद

भारत की आध्यात्मिक भूमि पर जब मंदिरों की घंटियां एक साथ बजती हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं ब्रह्मांड शिवमय होकर झूम उठा हो। घंटी की यह अनाहत ध्वनि केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि वह एक ऊर्जा का प्रवाह है जो मनुष्य के भीतर सोई चेतना को जागृत करती है। कहा जाता है कि जब भक्त मंदिर में प्रवेश करने से पहले घंटी बजाता है, तो उस क्षण उसकी आत्मा के चारों ओर की नकारात्मकता भस्म हो जाती है और वह पूरी तरह से शुद्ध होकर ईश्वरीय चेतना से जुड़ जाता है। भारत में हजारों मंदिर हैं, लेकिन कुछ ऐसे विशिष्ट शिव मंदिर हैं जहां घंटी बजाना पूजा का अनिवार्य अंग माना जाता है। यह केवल आरंभ का संकेत नहीं, बल्कि भगवान शिव की उपस्थिति का अनुभव कराने वाला साधन है। तमिलनाडु के कांचीपुरम में स्थित प्राचीन कैलासनाथर मंदिर इसका सबसे जीवंत उदाहरण है। यह मंदिर न केवल वास्तुकला का अद्भुत नमूना है, बल्कि यह स्वयं एक जीवित ऊर्जा केंद्र के रूप में जाना जाता है। 8वीं शताब्दी में पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय द्वारा निर्मित यह मंदिर उस काल के वैदिक और तांत्रिक ज्ञान का साक्षात प्रतीक है। यहां का हर पत्थर, हर नक्काशी और हर गली-दीवार मानो दिव्यता का गीत गाती है। इस मंदिर की सबसे विशेष परंपरा घंटी बजाने से जुड़ी है। यहां यह माना जाता है कि जब कोई भक्त सच्चे मन से भगवान शिव का ध्यान करते हुए घंटी बजाता है, तो वह ध्वनि उसके भीतर सुप्त पड़ी कुंडलिनी शक्ति को हल्का-सा स्पंदन देती है। यह स्पंदन उसकी चेतना को ऊपर की ओर ले जाता है और उसे ध्यान की अवस्था में प्रवेश करने के लिए तैयार करता है। यह घंटी केवल ईश्वर को बुलाने की नहीं, बल्कि स्वयं को जगाने की पुकार है। यहां बिना घंटी बजाए की गई पूजा अधूरी मानी जाती है क्योंकि घंटी की ध्वनि के बिना साधक की आत्मा जाग्रत नहीं मानी जाती। जब मंदिर में घंटी बजती है, तो ऐसा लगता है मानो हजारों वर्षों की तपश्चर्या की ऊर्जा एक साथ गूंज उठी हो और हर दिशा में ‘ॐ नमः शिवाय’ का कंपन फैल गया हो। इसी तरह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में एलोरा गुफाओं के पास स्थित घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर में भी घंटी की परंपरा अत्यंत गूढ़ और रहस्यमय है। यह मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में

अंतिम स्थान पर है और इसलिए इसे शिव की पूर्णता का प्रतीक माना जाता है। यहां प्रवेश द्वार पर लगी घंटी को स्पर्श किए बिना कोई भक्त मंदिर के भीतर नहीं जा सकता। यह केवल नियम नहीं, बल्कि भक्त और भगवान के बीच संवाद की शुरुआत है। जब कोई भक्त इस घंटी को बजाता है, तो यह मानो ब्रह्मांड को संदेश देता है कि “मैं अपने अहंकार, भय और कर्मों के बोझ को बाहर छोड़ आया हूं, अब मैं केवल शरणागत हूं।” घंटी की गूंज के साथ ही मंदिर का वातावरण अदृश्य रूप से बदल जाता है—वहां की हवा तक भक्ति में डूब जाती है। शास्त्रों में वर्णन है कि घृष्णेश्वर के गर्भगृह तक पहुंचने से पहले घंटी बजाने से भक्त के भीतर का अंधकार मिट जाता है और उसका हृदय शिवमय हो उठता है। इस मंदिर में आने वाले साधक कहते हैं कि जब वे घंटी बजाते हैं तो उनके मन के भीतर एक गहरी शांति उतरती है, जैसे कोई अदृश्य शक्ति उन्हें आलिंगन में ले रही हो। कई श्रद्धालुओं के अनुभव में यह भी आया है कि उन्होंने जो भी मन्नत यहां की घंटी के आगे मांगी, वह पूरी हुई—क्योंकि यह घंटी केवल ध्वनि नहीं, बल्कि शिव की कृपा का स्पंदन है। गुजरात के भावनगर जिले में स्थित घंटेश्वर महादेव मंदिर में तो घंटियों की गूंज ही जीवन का संगीत बन चुकी है। इस मंदिर में प्रवेश करते ही चारों ओर सैकड़ों पीतल और कांसे की घंटियां लटकती नजर आती हैं, जिनकी झंकार से पूरा वातावरण मंत्रमुग्ध हो उठता है। यहां हर भक्त दर्शन से पहले घंटी बजाता है और अपनी मनोकामना ईश्वर के चरणों में रखता है। कहा जाता है कि अगर कोई व्यक्ति सच्चे मन से शिव का नाम लेकर घंटी बजाए तो उसकी इच्छा स्वयं ब्रह्मांड की ऊर्जा से जुड़ जाती है और वह अवश्य पूर्ण होती है। जब वह इच्छा पूरी होती है, तो वह भक्त आभार स्वरूप एक नई घंटी मंदिर में चढ़ाता है। इस परंपरा के कारण मंदिर की छत और आंगन हजारों घंटियों से सुसज्जित हो चुके हैं। जब हवा बहती है, तो वे सब एक साथ झूम उठती हैं—उनकी झंकार में ऐसा लगता है मानो हजारों आत्माएं एक साथ शिव का नाम जप रही हों। सावन का महीना आते ही यह मंदिर और भी अलौकिक हो जाता है। जब हजारों श्रद्धालु एक साथ “हर हर महादेव” का उद्घोष करते हैं और घंटियों की ध्वनि गूंजती है, तो ऐसा लगता है कि स्वयं कैलाश पर्वत का नाद धरती पर उतर आया हो। इन सभी मंदिरों की परंपरा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब घंटी बजती है, तो उससे उत्पन्न ध्वनि तरंगें 2000 हर्ट्ज से अधिक आवृत्ति वाली होती हैं, जो वायुमंडल में उपस्थित नकारात्मक तरंगों को समाप्त कर देती हैं। यह ध्वनि मनुष्य के मस्तिष्क में अल्फा वेव्स उत्पन्न करती है, जिससे मन शांत और केंद्रित होता है। इसी कारण घंटी बजाने को ध्यान की तैयारी माना जाता है—यह साधक के भीतर स्थिरता और साक्षीभाव की स्थिति लाती है। यह कंपन केवल वायु में ही नहीं, बल्कि आत्मा के स्तर तक पहुंचता है। इस प्रकार जब भारत के इन पवित्र शिव मंदिरों में घंटी बजती है, तो वह केवल एक आवाज नहीं होती—वह एक पुकार होती है, जो सीमित से असीम की यात्रा का आरंभ करती है। वह ध्वनि हमें यह स्मरण दिलाती है कि भगवान शिव केवल कैलाश पर नहीं, बल्कि हर उस हृदय में निवास करते हैं जहां शुद्ध भाव और समर्पण की झंकार गूंजती है। घंटी की हर टंकार कहती है—“जागो, ओ साधक! भीतर का शिव तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।” और जब वह टंकार आत्मा तक पहुंचती है, तो वहीं से आरंभ होता है सच्चे मोक्ष और अनंत शांति का मार्ग।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

बेमौसम बारिश से कृषि फसलों को हुए व्यापक नुकसान से धरतीपुत्रों को उबारने के लिए राज्य सरकार की संपूर्ण संवेदना

▸▸मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रभावित किसानों की सहायता के लिए अब तक का सबसे बड़ा लगभग 10 हजार करोड़ रुपए का ऐतिहासिक सहायता पैकेज घोषित किया

▸▸सिंचित एवं असिंचित फसलों के लिए एक समान मानदंड पर सहायता देने का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का ऐतिहासिक निर्णय

▸▸हाल ही में हुई बेमौसम बारिश से उत्पन्न असाधारण स्थिति में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व वाली राज्य सरकार किसानों पर आन पड़ी विपदा की घड़ी में भारी सहायता पैकेज के साथ खड़ी रही

▸▸33 जिलों की 251 तहसीलों के 16,500 से अधिक गाँवों के किसानों को हुए फसल नुकसान का सर्वेक्षण 5100 टीमों ने किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने हाल ही में बेमौसम बारिश तथा मौसम में बदलाव के कारण उत्पन्न हुई असाधारण स्थिति में कृषि फसलों को हुए नुकसान से किसानों को तेजी से उबारने के लिए अब तक का सबसे बड़ा लगभग 10 हजार करोड़ रुपए का ऐतिहासिक सहायता पैकेज घोषित किया है। राज्य सरकार ने धरतीपुत्रों पर आन पड़ी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान हर विपदा में उनके साथ पूरी सहानुभूति के साथ खड़े रहकर कृषि फसलों के नुकसान के समक्ष समय-समय पर उदारतम सहायता पैकेज दिए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों के हितों के लिए जो अनेक कल्याणकारी कदम उठाए हैं, उन्हें मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल किसान हितकारी दृष्टिकोण से निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।

इस वर्ष हाल ही में हुई बेमौसम व्यापक बारिश से किसानों की खड़ी फसलों को कटाई के समय ही अधिकतम आर्थिक नुकसान झेलने की नौबत आई है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने उदारतम सहायता से किसानों को इस नुकसान से यथासंभव शीघ्रता से उबारने का संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाया है।

राज्य में अब तक दिए गए राहत सहायता पैकेज के इतिहास में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सिंचित एवं असिंचित फसलों को एक समान फसल नुकसान क्षतिपूर्ति (मुआवजा) देने का महत्वपूर्ण संवेदनशील निर्णय किया है। राज्य के किसानों को हाल की बेमौसम बारिश से हुए फसल नुकसान के समक्ष इस निर्णय के अनुसंधान में 22 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर, प्रति हेक्टेयर दो हेक्टेयर की सीमा में सहायता राज्य सरकार देगी। कृषि फसलों को जो व्यापक नुकसान की मार झेलनी पड़ी है, उससे किसानों को तेजी से उबारने के लिए राज्य सरकार इस राहत-सहायता पैकेज अंतर्गत लगभग 10 हजार करोड़ रुपए की सहायता चुकाएगी।

मुख्यमंत्री इस प्राकृतिक आपदा में लगातार किसानों की चिंता कर उनके साथ खड़े रहे हैं। इतना ही नहीं; उन्होंने उच्च स्तरीय बैठक में बेमौसम वर्षा की तबाही से प्रभावित हुए 251 तहसीलों के 16,500 से अधिक गाँवों के किसानों को हुए नुकसान का सर्वेक्षण 3 दिनों में पूर्ण करने के लिए 5 हजार से अधिक टीमों को दिन-रात कार्यरत करने के दिशा-निर्देश दिए थे।

इन दिशा-निर्देशों के चलते कृषि विभाग तथा सम्बद्ध विभागों एवं जिला प्रशासनों ने निरंतर तत्परता के साथ 24X7 कार्य करके फसल नुकसान का सर्वेक्षण कार्य किया। मुख्यमंत्री ने राज्य मंत्रिमंडल के मंत्रियों को वर्षा प्रभावित क्षेत्रों की स्वयं जानकारी प्राप्त करने के लिए सम्बद्ध जिलों के दौरे करने के निर्देश भी दिए थे।

इन निर्देशों के चलते उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने सूरत जिले, कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने भावनगर, आदिजाति विकास मंत्री श्री नरेशभाई पटेल ने तापी, वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा ने जूनागढ तथा गीर सोमनाथ और राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया ने अमरेली जिले का प्रत्यक्ष दौरा किया और मौके पर नुकसान की जानकारी प्राप्त कर मुख्यमंत्री को विवरण दिया। मुख्यमंत्री स्वयं भी गीर सोमनाथ तथा जूनागढ जिलों के प्रभावित क्षेत्रों में पहुँचे और उन्होंने धरतीपुत्रों की व्यथा संवेदनशीलता के साथ सुनकर उन्हें सांत्वना दी थी।

पश्चिम रेलवे ने "वन्दे मातरम्" की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में "वन्दे मातरम्" का पूर्ण संस्करण प्रस्तुत किया

"एक गीत... एक राष्ट्र... एक भावना - वन्दे मातरम् हम सबको जोड़ता है"

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ "वन्दे मातरम्" गाते हुए दिखाई दे रहे हैं। भारत के राष्ट्रीय गीत - "वन्दे मातरम्" के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 7 नवंबर, 2025 को चर्चगेट स्थित पश्चिम रेलवे मुख्यालय में इस गीत के पूर्ण संस्करण का सामूहिक गायन आयोजित किया गया। यह समारोह भारत के माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आयोजित मुख्य समारोह के साथ आयोजित किया गया। मुख्यालय में यह कार्यक्रम पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता के नेतृत्व में आयोजित किया गया और इसमें प्रमुख विभागाध्यक्षों, वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

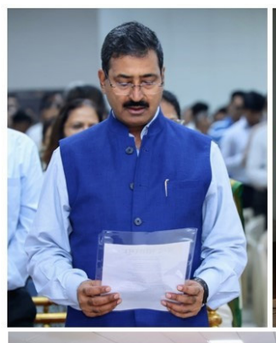

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, राष्ट्रव्यापी स्मरणोत्सव के अनुरूप हमारे राष्ट्रगीत के 150 गौरवशाली वर्षों के उपलक्ष्य में राष्ट्र के प्रति एकता, सद्भाव और समर्पण के साझा आदर्शों की पुष्टि करने के लिए मुख्यालय कार्यालय, सभी मंडलों और कारखानों सहित पश्चिम रेलवे पर "वन्दे मातरम्" का सामूहिक गायन आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम देशभक्ति के जोश और उत्साह के साथ आयोजित किया गया और इसमें सभी स्तरों के अधिकारियों और कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई, जो गर्व और देशभक्ति की भावना से इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल हुए।

वर्ष 2025 में बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित "वन्दे मातरम्" की रचना के 150 वर्ष पूरे हो जाएँगे। यह गीत अक्षय नवमी (7 नवंबर 1875) के दिन लिखा गया था और पहली बार साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में उनके उपन्यास आनंदमठ के एक अंश के रूप में प्रकाशित हुआ था। दशकों से यह गीत भारत की स्वतंत्रता, एकता और राष्ट्रीय गौरव का अमर प्रतीक बन गया है।

इस सामूहिक पहल के माध्यम से पश्चिम रेलवे गर्वपूर्वक राष्ट्र के साथ इस ऐतिहासिक अवसर का उत्सव मनाते हुए, "वन्दे मातरम्" की भावना के अनुरूप देशभक्ति, सेवा एवं समर्पण के आदर्शों को सशक्त बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराती है।

पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस एवं दुर्गापुरा के बीच चलाएगी स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए तथा अतिरिक्त यात्री यातायात की मांग को पूरा करने के उद्देश्य से बांद्रा टर्मिनस एवं दुर्गापुरा स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर एक स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार है:

1. ट्रेन संख्या 09730/09729 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल [02 फेरे]

ट्रेन संख्या 09730 बांद्रा टर्मिनस-दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 10 नवंबर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से 10:00 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 05:30 बजे दुर्गापुरा पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09729 दुर्गापुरा-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल रविवार, 9 नवंबर, 2025 को दुर्गापुरा से 12:25 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 07:00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, रतलाम, नागदा, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा, सवाई माधोपुर और बनस्थली निवाई स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी-2 टियर, एसी-3 टियर, एसी-3 टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन 09730 की बुकिंग 08 नवम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री द्वारा बेमौसम बारिश से प्रभावित किसानों के लिए 10,000 करोड़ रुपए के राहत पैकेज की घोषणा

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात में बेमौसम बारिश से फसलों को हुए नुकसान को देखते हुए प्रभावित किसानों के लिए 10,000 करोड़ रुपए के राहत पैकेज की घोषणा की है।

श्री पटेल ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर किए गए पोस्ट में कहा, "गुजरात में पिछले दो दशकों में न हुई हो, ऐसी असाधारण बेमौसम बारिश इस वर्ष होने से राज्य के विभिन्न जिलों के किसानों की फसलों को बड़ा नुकसान हुआ है।"

उन्होंने कहा, "इस संदर्भ में मैंने तथा मेरे सहयोगी मंत्रियों ने अलग-अलग जिलों में जाकर प्रभावित किसानों के साथ प्रत्यक्ष बातचीत कर उनकी स्थिति जानी।"

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक आपदा की इस घड़ी में राज्य सरकार धरतीपुत्रों की व्यथा को समझ कर पूरी संवेदना से उनके साथ खड़ी है।

उन्होंने कहा, "राज्यभर के किसानों की फसलों को हुए व्यापक नुकसान के समक्ष उनकी भावनाओं को ध्यान में रखकर मैं राज्य सरकार की ओर से धरतीपुत्रों के लिए लगभग 10 हजार करोड़ रुपए के राहत-सहायता पैकेज की घोषणा करता हूँ।"

उन्होंने कहा कि इसके अलावा राज्य सरकार 9 नवंबर से किसानों से समर्थन मूल्य पर लगभग 15,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की मूंगफली, मूंग, उड़द तथा सोयाबीन की खरीद भी करने जा रही है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा, "मैं विश्वास देता हूँ कि राज्य सरकार अन्नदाताओं की आर्थिक सुख-समृद्धि की चिंता अपने सिर लेकर उनकी सहायता के लिए सदैव प्रतिबद्ध थी, है और रहेगी।"

राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के गौरवशाली 150 वर्ष, वडोदरा मंडल पर रेलकर्मियों ने किया सामूहिक गायन

(जीएनएस)। स्वतंत्रता संग्राम में देशवासियों में राष्ट्रभक्ति की अलख जगाने वाले वन्दे मातरम् की रचना आज से 150 वर्ष पूर्व हुई थी। भारत के राष्ट्रीय गीत "वन्दे मातरम्" के 150 वर्ष के स्मरणोत्सव के अवसर पर नई दिल्ली में आज संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष भर चलने वाले स्मरणोत्सव का उद्घाटन किया। इसी क्रम में पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के मंडल कार्यालय, एकता नगर एवं वडोदरा स्टेशनों पर बड़ी संख्या में रेलकर्मियों ने उपस्थित रह कर राष्ट्र गीत का सामूहिक गायन किया। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार वर्ष 2025 में वंदे मातरम गीत की रचना के 150 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस राष्ट्रीय गीत ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया और सदा ही राष्ट्रीय गौरव एवं एकता का अलख जगाता रहा है। राष्ट्रीय गीत "वन्दे मातरम्* के 150 वर्ष के स्मरणोत्सव के अवसर पर वडोदरा मंडल के मंडल कार्यालय में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री नीरज धमीजा के मार्गदर्शन में मंडल कार्यालय के कांफ्रेंस हॉल में समारोह

का आयोजन किया गया, जिसमें रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित हो कर नई दिल्ली में इस अवसर पर आयोजित समारोह में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ वीडियो लिंक के माध्यम से मंडल कार्यालय में सामूहिक गायन किया और देशभक्ति को नमन किया।

इसके साथ ही वडोदरा मंडल के एकता नगर एवं वडोदरा स्टेशन पर स्टेशन कर्मियों ने राष्ट्रभक्ति और एकता के प्रतीक राष्ट्रीय गीत का सामूहिक वाचन किया। मंडल पर इस समारोह का समन्वय एवं सफल आयोजन वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री तेजराम मीना के नेतृत्व में कार्मिक विभाग की टीम द्वारा किया गया। श्री सक्सेना ने आगे बताया कि श्री बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा रचित हमारा राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम अक्षय नवमी के पावन अवसर पर, 7 नवंबर 1875 को लिखा गया था। वंदे मातरम पहली बार साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में उनके उपन्यास आनंदमठ के एक अंश के रूप में प्रकाशित हुआ था। मातृभूमि को शक्ति, समृद्धि और दिव्यता का प्रतीक बताते हुए इस गीत ने भारत की एकता और आत्मगौरव की जागृत भावना को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी। यह गीत जल्द ही राष्ट्र के प्रति समर्पण का एक चिरस्थायी प्रतीक बन गया।

वडोदरा मंडल के विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर ऑडियो संदेश एवं विशेष उद्घोषणाएं प्रसारित की जा रही हैं, साथ ही स्टेशनों पर लगे एलईडी डिस्प्ले के माध्यम से भी "वंदे मातरम" से संबंधित जानकारी आज से पूरे वर्षभर प्रदर्शित की जाएगी।

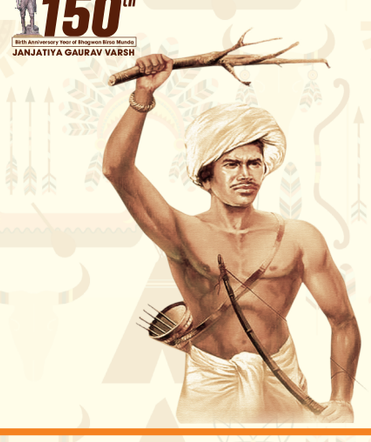

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

"हर घर स्वदेशी
घर-घर स्वदेशी"

वनबंधु कल्याण योजना
VANBANDHU KALYAN YOJANA

भगवान बिरसा मुंडा की १५०वीं जन्म जयंती
जनजातीय गौरव वर्ष

सुदूर क्षेत्रों से मुख्यधारा तक

बुनियादी सुविधाओं के द्वारा विकास को गति

पक्की सड़क, सिंचाई और विद्युतीकरण जैसी बुनियादी सुविधाएं पूरी करके आदिजाति के जीवन में समृद्धि का नया अध्याय

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई वनबंधु कल्याण योजना के माध्यम से आदिवासी समुदाय का सामाजिक और आर्थिक उत्थान

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल की सरकार ने वनबंधु कल्याण योजना-२ के तहत बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराकर आदिजाति विकास को दी गति

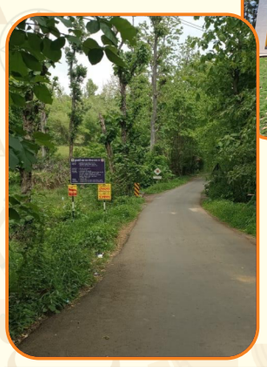

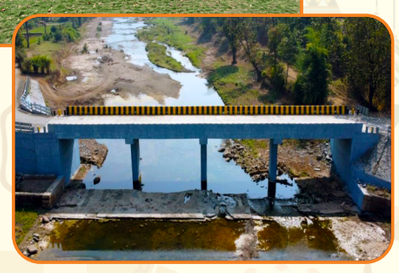

बुनियादी विकास की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ (वर्ष २०२०-२१ से २०२४-२५):

- आदिजाति क्षेत्रों में बड़ी उद्वहन पाइपलाइन योजनाओं में अनुमानित ₹ २,९०३.३१ करोड़ के १० कार्य पूर्ण तथा ₹ २,२११.६१ करोड़ के ९ कार्य प्रगति पर
- आदिवासी क्षेत्रों में अनुमानित ₹ ४,०९८.६२ करोड़ की लागत से ४,६७९ सड़कों और पुलों के कार्य पूर्ण
- आदर्श निवासी विद्यालयों में (२०२१-२२ से २०२५-२६) अनुमानित ₹ १,१०८ करोड़ की लागत पर कुल ३४ नए भवनों का निर्माण, जिससे अनुमानित १०,००० विद्यार्थियों को लाभ
- सरकारी छात्रालयों के लिए (२०२१-२२ से २०२५-२६) अनुमानित ₹ ७९० करोड़ की लागत पर कुल ५८ नए भवनों का निर्माण, जिससे अनुमानित १०,८५० विद्यार्थियों को लाभ
- एकलव्य मॉडल रेसिडेंशियल स्कूल, GLRS, मॉडल डे स्कूल और सैनिक स्कूल के साथ २९ विद्यालयों के निर्माण के लिए अनुमानित ₹ ४०१.३५ करोड़ का व्यय
- आदिजाति क्षेत्रों के सभी राजस्व गांवों को पक्की सड़कों से जोड़कर मुख्यधारा से जोड़ा गया

आदिजाति विकास विभाग, गुजरात सरकार

वंदे मातरम् भारत की आत्मा और राष्ट्र संकल्प का स्वर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को 'वंदे मातरम्' की रचना के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित एक भव्य समारोह में कहा कि 'वंदे मातरम्' केवल एक गीत नहीं, बल्कि यह भारत की आत्मा का स्पंदन, राष्ट्रभक्ति का उत्कट भाव और हर भारतीय के भीतर जाग्रत उस ऊर्जा का प्रतीक है जो देश को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। उन्होंने कहा कि यह गीत भारत के गौरवशाली अतीत, आत्मविश्वासी वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य को एक सूत्र में पिरोता है। यह केवल शब्दों का समूह नहीं बल्कि एक ऐसा मंत्र है जिसने भारत को बार-बार अपने आत्मबल की याद दिलाई है।

प्रधानमंत्री ने समारोह के दौरान 'वंदे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में स्मारक सिक्का और विशेष डाक टिकट जारी किया। उन्होंने कहा कि बंकिमचंद्र चटर्जी की यह अमर रचना भारत की उस आध्यात्मिक चेतना से उत्पन्न हुई थी, जो मां भारती को केवल भौगोलिक भूमि नहीं, बल्कि सजीव देवी स्वरूपा के रूप में देखती है। उन्होंने कहा कि गुलामी के दौर में जब भारत की आवाज दबाई जा रही थी, तब 'वंदे मातरम्' ने हर भारतीय को यह एहसास कराया कि वह दास नहीं, बल्कि एक ऐसे महान राष्ट्र का पुत्र है जिसकी संस्कृति अनादि काल से विश्व को प्रकाश दे रही है।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि जब रवींद्रनाथ टैगोर ने 1896 के कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार इस गीत को सुरों में ढाला, तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह गीत आने वाले दशकों में आजादी की लड़ाई का घोष बन जाएगा। 1905 के बंग-भंग आंदोलन के समय से लेकर 1947 की स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह गीत हर मोर्चे पर भारत की प्रेरणा रहा। जेल की दीवारों से लेकर सत्याग्रह की गलियों तक, हर जगह "वंदे मातरम्" का स्वर गूंजता था। यह वह शब्द था जिसने गुलामी की नींद में सोए भारत को जगाया और उसमें नई चेतना का संचार किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बंकिम बाबू ने मां भारती को तीन रूपों में देखा— सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा। इसका तात्पर्य

यह है कि भारत न केवल ज्ञान का केंद्र है, बल्कि समृद्धि और शक्ति का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आज जब भारत विज्ञान, तकनीक, अंतरिक्ष और रक्षा के क्षेत्र में नए इतिहास रच रहा है, तब यह उसी "ज्ञान-लक्ष्मी-शक्ति" के त्रिवेणी रूप का पुनर्जागरण है। प्रधानमंत्री ने कहा कि जब भारत ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव को छुआ, जब हमारी बेटियां फाइटर जेट उड़ाने लगीं, जब देश ने डिजिटल क्रांति से नई पहचान बनाई, तब हर भारतीय के हृदय से एक ही स्वर निकला — "भारत माता की जय, वंदे मातरम्।"

मोदी ने स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि जिन वीरों ने "वंदे मातरम्" कहते हुए हंसते-हंसते प्राण न्योछावर कर दिए, उनका त्याग इस गीत की हर पंक्ति में बसता है। उन्होंने कहा कि यह गीत केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान भारत की आत्मा है जो हर नागरिक को प्रेरित करती है कि वह राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखे।

प्रधानमंत्री ने यह भी घोषणा की कि 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 7 नवम्बर 2025 से 7 नवम्बर 2026 तक एक वर्ष तक देशभर में राष्ट्रीय स्तर पर समारोह आयोजित किए जाएंगे। इस दौरान स्कूलों, विश्वविद्यालयों, सांस्कृतिक संस्थानों और सार्वजनिक स्थलों पर सामूहिक गायन, कला प्रदर्शनियां, निबंध प्रतियोगिताएं और ऐतिहासिक यात्राओं का आयोजन किया जाएगा ताकि नई पीढ़ी इस गीत की आत्मा को समझ सके।

कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह के अंत में पूरे सभागार में एक साथ 'वंदे मातरम्' का सामूहिक गायन हुआ, जिसकी गूंज से वातावरण राष्ट्रभक्ति से भर उठा। प्रधानमंत्री ने अपने अंतिम शब्दों में कहा — "जब तक भारत का आकाश है, जब तक इस भूमि पर कोई भारतीय सांस लेता है, 'वंदे मातरम्' का स्वर अमर रहेगा, क्योंकि यही भारत की आत्मा और हमारे राष्ट्र संकल्प का स्वर है।"

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती — जनजातीय गौरव वर्ष का उत्सव

- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अंबाजी से एकता नगर तक आयोजित होने वाली जनजातीय गौरव यात्रा को प्रस्थान कराया
- विधानसभा अध्यक्ष तथा राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों की प्रेरक उपस्थिति
- 7 से 13 नवंबर तक अंबाजी से एकता नगर तथा उमरगाम से एकता नगर तक कुल 1,378 किलोमीटर की जनजातीय गौरव यात्रा का विशेष आयोजन
- राष्ट्र निर्माण में जनजातीय समाज के गौरवपूर्ण योगदान को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य के साथ राज्य के गाँवों में भ्रमण करेगी यात्रा
- स्वतंत्रता संग्राम में अग्रसर रहे आदिवासी बांधवों को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अमृतकाल के भारत की विकास यात्रा में भागीदार बनाया है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भगवान बिरसा मुंडा की डेढ़ सौवीं जयंती के उत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित हो रही जनजातीय गौरव यात्रा का शुक्रवार को अंबाजी से प्रारंभ कराते हुए कहा कि जिसे कोई न पूछे, उसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पूजते हैं। श्री पटेल ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में भगवान बिरसा मुंडा के नेतृत्व में अग्रसर रहे आदिवासियों को प्रधानमंत्री ने अमृतकाल के भारत की इस विकास यात्रा में भागीदार बनाया है। इतना ही नहीं; स्वतंत्रता वीर भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की नई परंपरा भी उन्होंने 2011 से स्थापित की है। आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती का उत्सव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से इस वर्ष मनाया जा रहा है।

स्वतंत्रता संग्राम में बिरसा मुंडा की अगुवाई में आदिजातियों के ऐतिहासिक योगदान को आज की पीढ़ी जाने तथा उससे राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा प्राप्त करे; इस उद्देश्य के साथ प्रधानमंत्री के नेतृत्व में इस वर्ष को 'जनजातीय गौरव वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उत्सव के उपलक्ष्य में 1 से 15 नवंबर, 2025 के दौरान 'जनजातीय गौरव वर्ष महोत्सव' के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा 7 से 13 नवंबर तक राज्य के आदिजाति क्षेत्रों में जनजातीय गौरव यात्रा निकाली जाएगी; जिसमें रूट नंबर 1 उमरगाम से एकता नगर तक 665 किलोमीटर तथा रूट नं. 2 अंबाजी से एकता नगर तक 713 किलोमीटर सहित कुल 1,378 किलोमीटर में आदिजाति क्षेत्र को समाविष्ट करते हुए इस 'जनजातीय गौरव रथयात्रा' का विशेष आयोजन किया गया है।

इस यात्रा के दौरान जनजातीय गौरव रथ जिन गाँवों में जाएगा, वहाँ लोगों द्वारा स्वागत किया जाएगा तथा रात्रि विराम स्थलों पर भगवान बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र पर नाटक मंचन, प्रदर्शन होंगे तथा केन्द्र-राज्य सरकार की योजनागत जानकारी भी लोगों को दी जाएगी।

यात्रा के माध्यम से उसके रूट पर स्थित गाँवों में स्वास्थ्य जाँच शिविर, सेवा सेतु, सामूहिक स्वच्छता सहित अनेक सेवाभावी कार्यक्रम जन भागीदारी से आयोजित होंगे। बच्चे, युवा तथा समग्र समाज भगवान बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र से परिचित हों; ऐसे कार्यक्रम भी इस यात्रा के दौरान होने वाले हैं। इसके अतिरिक्त; भगवान बिरसा मुंडा द्वारा राष्ट्र निर्माण के लिए दिए गए योगदान पर चित्रकला तथा वक्तव्य प्रतियोगिता, नाटक-भवाई एवं उनके जीवन पर आधारित व्याख्यान, फिल्म प्रदर्शन भी राज्य सरकार के विभागों द्वारा आयोजित होने वाले हैं। 14 आदिजाति जिलों के अलावा 20 जिलों में 13 से 15 नवंबर के दौरान जनजातीय गौरव वर्ष उत्सव के विभिन्न कार्यक्रम होने वाले हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अंबाजी धाम से इस गौरव यात्रा को प्रस्थान कराते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने अपने कार्यकाल में आदिवासियों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता देते हुए अनेक कल्याण कार्यक्रम साकार किए हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा गुजरात में आदिजातियों के सामाजिक-आर्थिक उत्कर्ष के लिए शुरू कराई गई वनबंधु कल्याण योजना की अवधि को राज्य सरकार ने 1 लाख करोड़ रुपए के प्रावधान के साथ 2025 तक बढ़ाया है।

श्री भूपेंद्र पटेल ने बताया कि पीएम जनमन अभियान में राज्य के आदिम समूहों को प्रधानमंत्री आवास योजना के आवास, आदिम समूह बस्तियों में मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध कराने के लिए 21 मोबाइल टावर्स तथा 4जी सेवाएँ मिल रही हैं।

उन्होंने आदिकर्मयोगी अभियान अंतर्गत राज्य के 1 लाख 40 हजार से अधिक लोगों द्वारा आदिवासी ग्राम विजन 2030 तैयार करने में सहभागी होकर आदिजाति गाँवों के सर्वांगीण विकास का विलेज एक्शन प्लान तैयार किए जाने की सराहना की। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए विकसित भारत@2047 में इन आदिवासियों के उत्थान एवं योगदान; दोनों को महत्वपूर्ण बताया। इसके लिए उन्होंने वोकल फॉर लोकल द्वारा अधिक से अधिक स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने तथा स्थानीय आदिवासी हस्तकला एवं कारीगरी, खान-पान को प्रोत्साहन देकर जनजातीय गौरव को उजागर करने का भी आह्वान किया। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडाजी आदिवासी समाज के प्रेरणास्रोत तथा आदर्श व्यक्तित्व रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन द्वारा धर्म, संस्कृति एवं आदिवासी पहचान को बनाए रखने के अविरत प्रयास किए। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा अंधविश्वास को दूर करने के लिए जनजागृति फैलाई थी।

भावनगर रेल मंडल द्वारा पेंशनर्स हेतु डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट शिविर का सफल आयोजन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल द्वारा मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के दिशा-निर्देशों के अनुरूप पेंशनर्स के लिए डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट (जीवन प्रमाण पत्र) हेतु एक विशेष शिविर का आयोजन कम्युनिटी हॉल, भावनगर परा में किया गया। इस शिविर में 150 से अधिक पेंशनर्स ने भाग लिया। उन्हें डिजिटल माध्यम से जीवन प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन ने की। इस अवसर पर सहायक मंडल वित्त प्रबंधक (लेखा) श्री संजय सक्सेना तथा AFA (W&S), भावनगर वर्कशॉप श्री रतनेश कुमार उपस्थित रहे। अपने संबोधन में श्री हुबलाल जगन ने कहा कि "डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट प्रणाली से पेंशनर्स को अत्यधिक सुविधा प्राप्त होती है,

जिससे उन्हें बैंक या कार्यालय में बार-बार उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं रहती। यह व्यवस्था समय की बचत के साथ-साथ पारदर्शिता एवं सुगमता सुनिश्चित करती है।" उन्होंने सभी पेंशनर्स से इस डिजिटल सुविधा का अधिकाधिक लाभ लेने का आग्रह किया। श्री संजय सक्सेना एवं श्री रतनेश कुमार ने पेंशनर्स को डिजिटल प्रमाण पत्र पंजीकरण की तकनीकी प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा उन्हें आवश्यक सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर ऑल इंडिया पेंशनर्स एसोसिएशन के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। उन्होंने मंडल प्रशासन के इस सराहनीय कदम की प्रशंसा करते हुए पेंशनर्स के हित में ऐसे शिविरों के नियमित आयोजन का अनुरोध किया।

कार्यक्रम का समन्वयन मंडल कार्मिक विभाग द्वारा किया गया। शिविर के दौरान पेंशनर्स को "जीवन प्रमाण पत्र" के डिजिटल पंजीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया का प्रायोगिक प्रदर्शन (डेमो) भी कराया गया। भावनगर मंडल द्वारा आयोजित यह शिविर पेंशनर्स के हित में एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल सिद्ध हुआ, जिससे रेलवे के पेंशनरों को डिजिटल सेवाओं के प्रति जागरूकता एवं सुविधा दोनों प्राप्त हुईं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आदिशक्ति मां अंबा के दर्शन किए

मुख्यमंत्री ने मां अंबा की पूजा-अर्चना कर राज्य की शांति, समृद्धि और खुशहाली के लिए प्रार्थना की

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को आदिशक्ति धाम अंबाजी में जगतजननी मां अंबा के दर्शन किए और राज्य की शांति, समृद्धि एवं खुशहाली के लिए प्रार्थना की।

मुख्यमंत्री भगवान बिरसा मुंडा जी की 150वीं जयंती के अंतर्गत आयोजित जनजातीय गौरव यात्रा का शुभारंभ करने के लिए अंबाजी पहुंचे थे। यात्रा से पूर्व उन्होंने अंबाजी मंदिर में भावपूर्वक पूजा-अर्चना की।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी और राज्य मंत्री श्री प्रवीणभाई माळी सहित कई अग्रणी और अधिकारी भी मौजूद रहे।

पश्चिम रेलवे चलायेगी अहमदाबाद और बरौनी के बीच स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की मांग व सुविधा को ध्यान में रखते अहमदाबाद और बरौनी के बीच स्पेशल ट्रेन विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

ट्रेन संख्या 05262/05261 अहमदाबाद-बरौनी-अहमदाबाद स्पेशल (4 ट्रिप)

ट्रेन संख्या 05262 अहमदाबाद-बरौनी स्पेशल 13 और 14 नवंबर 2025 को अहमदाबाद से 14:20 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन 04.30 बजे बरौनी पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 05261 बरौनी-अहमदाबाद स्पेशल 11 और 12 नवंबर 2025 को बरौनी से 22:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन 08.00 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन आनंद, छायापुरी, गोधरा, रतलाम, नागदा, उज्जैन, संत हिरदाराम नगर, बीना, सागर, दमोह, कटनी मुडवारा, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छिवकी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, बक्सर, आरा, दानापुर, पाटलिपुत्र, हाजीपुर और शाहपुर पटोरी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 3 टियर इकॉनमी, स्लीपर और सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 05262 की बुकिंग 09 नवंबर, 2025 से यात्री आरक्षण केन्द्रों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

सूरत में इंसानियत शर्मसार: दबंग ने मजदूर को चाकू की नोक पर पीटा, पैर चाटने पर किया मजबूर , वीडियो वायरल, आरोपी की तलाश में पुलिस

(जीएनएस)। सूरत। गुजरात के औद्योगिक शहर सूरत से एक ऐसी दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है जिसने पूरे देश को झकझोर दिया है। अमरोली इलाके के एक ढाबे में मध्य प्रदेश से आए एक मजदूर के साथ जो अमानवीय व्यवहार हुआ, उसने समाज की संवेदनाओं पर गहरी चोट पहुंचाई है। एक दबंग व्यक्ति ने न केवल उसे बेरहमी से पीटा, बल्कि चाकू की नोक पर उसे अपमानित करते हुए अपने पैर चाटने के लिए मजबूर किया। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया है, जिसमें पीड़ित युवक बार-बार गिड़गिड़ाते हुए कहता नजर आ रहा है — "भोला भाई! मैं सूरत कभी वापस नहीं आऊंगा" यह भयावह घटना सूरत के अमरोली इलाके की बताई जा रही है। पुलिस के अनुसार पीड़ित मजदूर का नाम सुधीर पांडे है, जो मूल रूप से मध्य प्रदेश के रीवा जिले का निवासी है। वह कुछ महीनों से सूरत के इस ढाबे में काम कर रहा था और रोज़मर्रा की मजदूरी से अपना जीवन चला रहा था। घटना के बाद वह इतना भयभीत हो गया कि सूरत शहर छोड़कर भाग गया।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए दो वीडियो में साफ दिखाई दे रहा है कि

आरोपी, जिसे स्थानीय लोग "भोला भाई" कह रहे हैं, लाल टी-शर्ट पहने हुए है और हाथ में चाकू लेकर सुधीर को धमका रहा है। वह बार-बार कहता है कि "झुक जा, पैर चाट नहीं तो तुझे काट दूंगा।" पीड़ित युवक रोते हुए विनती करता है, "माफ कर दो भोला भाई, अब मैं सूरत नहीं आऊंगा।" इसके बावजूद आरोपी उसे पीटता रहता है और वीडियो बनाता है।

वीडियो में पीड़ित के बाल खींचकर थप्पड़ मारने और गालियां देने की तस्वीरें भी साफ दिखाई देती हैं। यह दृश्य इतना दर्दनाक है कि इसे देखने वाला हर व्यक्ति सिहर उठे। सूत्रों के मुताबिक आरोपी ने यह वीडियो खुद रिकॉर्ड किया और बाद में उसे सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया, मानो यह किसी 'शक्ति प्रदर्शन' का प्रतीक हो।

घटना की जानकारी मिलते ही सूरत पुलिस हरकत में आई और अमरोली थाने में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान कर ली गई है और उसकी तलाश में कई टीमें गठित की गई हैं। फॉरेंसिक टीम वीडियो की सत्यता की जांच कर रही है ताकि अदालत में इसे ठोस सबूत के रूप में पेश किया जा सके।

पुलिस सूत्रों के अनुसार यह विवाद मामूली बहस से शुरू हुआ था। बताया जा रहा है कि ढाबे में किसी बात को लेकर आरोपी और सुधीर के बीच कहासुनी हुई थी। लेकिन इस बहस ने क्रूरता का रूप तब लिया जब आरोपी ने अपनी दबंगई दिखाने के लिए चाकू निकाल लिया और सुधीर को बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। उसने डर और अपमान का माहौल बनाकर मजदूर को अपने पैर चाटने के लिए मजबूर किया।

सूरत के पुलिस अधीक्षक ने कहा है कि "यह केवल एक हिंसक कृत्य नहीं बल्कि मानवता के खिलाफ अपराध है। हम आरोपी को किसी भी हालत में बख्शेंगे नहीं।" साथ ही यह भी बताया गया है कि वीडियो में दिख रही लोकेशन और गवाहों के बयानों को मिलाकर पूरे मामले की सटीक पुनर्निर्माण (reconstruction) की जा रही है।

घटना के बाद मजदूर समुदाय में भय और गुस्से का माहौल है। सूरत में हजारों की संख्या में उत्तर भारत से आए मजदूर काम करते हैं। इस घटना ने उनके बीच असुरक्षा की भावना पैदा कर दी है। कई मजदूर संगठनों ने प्रशासन से मांग की है कि आरोपी पर न केवल सख्त कानूनी कार्रवाई हो, बल्कि मजदूरों की सुरक्षा के लिए विशेष निगरानी तंत्र बनाया जाए।

मध्य प्रदेश में सुधीर पांडे के गांव तक यह खबर पहुंच गई है। वहां के लोगों ने कहा कि सुधीर मेहनतकश और ईमानदार लड़का था, जो अपने परिवार का पेट पालने के लिए सूरत गया था। किसी की रोटी कमाने की कोशिश का इस तरह मजाक उड़ाना और अपमान करना बेहद निंदनीय है।

यह घटना केवल एक व्यक्ति की पीड़ा नहीं बल्कि समाज में फैल रहे उस विषैले अहंकार की झलक है जो ताकत के नशे में इंसानियत को रौंद देता है। जब मजदूरों को अपनी आजीविका के लिए दूसरे राज्यों में जाना पड़ता है, तो कम से कम उन्हें सुरक्षा और सम्मान की गारंटी मिलनी चाहिए।

फिलहाल, पुलिस आरोपी की गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दे रही है और दावा किया है कि उसे जल्द ही पकड़ लिया जाएगा। लेकिन जो सवाल इस घटना ने खड़ा किया है — क्या इस देश में अब भी गरीब की इज्जत सस्ती है? क्या इंसानियत अब ताकतवरों की जागीर बन गई है?

सुधीर की वह दर्दनाक आवाज, "भोला भाई, मैं सूरत नहीं आऊंगा" केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि उस मजदूर वर्ग की करुण पुकार है जो रोज़ मेहनत करता है, अपमान सहता है और फिर भी चुप रहता है — शायद अगली रोटी की तलाश में।

सूरत में सनसनी: खून से लथपथ कार में मिलीं महिला RFO, सिर में गोली लगी — दो दिन पहले पति पर दर्ज कराया था उत्पीड़न का केस

(जीएनएस)। सूरत। गुजरात के सूरत शहर से एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है जिसने पूरे प्रशासनिक महकमे को हिला दिया है। कमरेज तालुका के वाव जोखा गांव के पास सड़क किनारे एक कार में महिला रेंज फॉरेस्ट ऑफिसर (RFO) को खून से लथपथ और बेहोशी की हालत में पाया गया। उनके सिर में गोली लगी थी और कार के अंदर खून फैला हुआ था। यह वही अधिकारी हैं जिन्होंने दो दिन पहले ही अपने पति के खिलाफ उत्पीड़न का मामला दर्ज कराया था। पुलिस इस घटना को लेकर हत्या या आत्महत्या के एंगल से जांच कर रही है।

स्थानीय लोगों के अनुसार, शुक्रवार सुबह गांव के एक निवासी ने सड़क किनारे खड़ी कार को देखा। जब उसने अंदर झांका, तो सामने का दृश्य देखकर उसके होश उड़ गए — कार के भीतर महिला अधिकारी बेहोश पड़ी थीं और उनके सिर से खून बह रहा था। राहगीर ने तत्काल पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची कमरेज पुलिस ने उन्हें तुरंत अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने बताया कि उनके सिर में गोली लगी है।

सूरत जिला पुलिस अधीक्षक (SP) भावेश गढ़िया ने बताया कि डॉक्टरों ने आपातकालीन सर्जरी कर उनके सिर से गोली निकाल ली है, लेकिन उनकी हालत अब भी बेहद गंभीर बनी हुई है। उन्हें सूरत के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम

लगातार उनकी निगरानी कर रही है।

शुरुआती जांच में जब उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया, तो मेडिकल टीम को लगा कि उनके सिर में किसी ठोस वस्तु से चोट लगी है। लेकिन जब सीटी स्कैन कराया गया, तो डॉक्टरों को सिर के अंदर धातु जैसी वस्तु दिखाई दी — बाद में स्पष्ट हुआ कि वह गोली थी। ऑपरेशन के दौरान गोली को निकाल लिया गया, लेकिन चिकित्सकों ने बताया कि अभी वह खतरे से बाहर नहीं हैं।

पुलिस ने बताया कि यह घटना कई सवाल खड़े कर रही है। महिला अधिकारी ने दो दिन पहले ही अपने पति, जो कि आरटीओ विभाग में इंस्पेक्टर हैं, के खिलाफ उत्पीड़न और धमकी देने का मामला दर्ज कराया था। उन्होंने अपनी शिकायत में आरोप लगाया था कि उनका पति लगातार उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहा था और गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी थी।

कमरेज पुलिस के अनुसार, मामला बेहद संवेदनशील है और हर पहलू से जांच की जा रही है। पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि यह घटना आत्महत्या का प्रयास थी या किसी ने उन पर हमला किया। फिलहाल फॉरेंसिक टीम को जांच में शामिल किया गया है ताकि कार, हथियार और गोली के स्रोत का पता लगाया जा सके। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, कार के भीतर से एक पिस्तौल जैसी वस्तु और कुछ निजी सामान बरामद किए गए हैं। कार की फॉरेंसिक जांच जारी है और आसपास के इलाके के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि महिला अधिकारी पिछले कुछ दिनों से तनाव में थीं।

घटना की जानकारी मिलते ही सूरत वन विभाग और स्थानीय प्रशासन के अधिकारी अस्पताल पहुंचे और उनके परिवार को घटना की जानकारी दी। उनके परिवार ने आरोप लगाया है कि यह "स्पष्ट रूप से सोची-समझी साजिश" है। परिवार का कहना है कि महिला अफसर ने अपने पति के खिलाफ कार्रवाई के बाद से ही सुरक्षा की चिंता जताई थी।

इस पूरे मामले ने गुजरात प्रशासनिक सेवाओं में सनसनी फैला दी है। वन विभाग के अधिकारियों ने कहा कि यह घटना न केवल विभागीय महिला कर्मचारियों की सुरक्षा पर सवाल उठाती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि घरेलू उत्पीड़न के मामलों में प्रभावशाली लोगों की भूमिका की जांच कितनी जरूरी है।

पुलिस ने फिलहाल महिला RFO के पति को पूछताछ के लिए नोटिस जारी किया है। कमरेज थाना प्रभारी ने बताया कि जब तक फॉरेंसिक रिपोर्ट और बयान उपलब्ध नहीं होते, तब तक किसी नतीजे पर पहुँचना जल्दबाज़ी होगी।

हालांकि घटना का क्रम जिस तरह से सामने आ रहा है, उसने पूरे राज्य में चिंता की लहर दौड़ा दी है। यह मामला अब महिला सुरक्षा, वैवाहिक उत्पीड़न और प्रशासनिक अधिकारियों की व्यक्तिगत सुरक्षा पर एक गहन बहस को जन्म दे रहा है। डॉक्टरों के अनुसार, महिला अधिकारी की हालत स्थिर नहीं है, लेकिन उन्हें बचाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। सूरत पुलिस ने कहा कि "यह मामला केवल गोलीबारी का नहीं, बल्कि एक अधिकारी के जीवन पर खतरे का है, जो हाल ही में न्याय के लिए आवाज उठा रही थी।" पूरे गुजरात में अब यह सवाल गूंज रहा है — क्या यह आत्महत्या की कोशिश थी, या फिर न्याय मांगने की सजा?

अहमदाबाद मंडल पर राष्ट्रगीत "वंदे मातरम" के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्मरण उत्सव का आयोजन

(जीएनएस)। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज 07.11.2025 को नई दिल्ली में राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में वर्षभर चलने वाले स्मरण समारोह का शुभारंभ किया। पूरे देश में मनाए जा रहे "राष्ट्रव्यापी उत्सव" के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर भी यह ऐतिहासिक अवसर पूर्ण श्रद्धा, उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया।

माननीय प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर 150 वर्ष का प्रतीक, स्मारक सिक्का और डाक टिकट भी जारी किया। यह वर्षभर 7 नवम्बर 2025 से 7 नवम्बर 2026 तक 4 चरणों में चलने वाला राष्ट्रव्यापी स्मरण उत्सव कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ का प्रतीक है, जो इस अमर रचना, जिसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया और आज भी राष्ट्रीय गर्व एवं एकता की भावना को प्रबल करती है। इस उत्सव के दौरान "वंदे मातरम्" के पूर्ण संस्करण का सामूहिक गायन देशभर के सार्वजनिक स्थलों पर आयोजित किया गया, जिसमें समाज के सभी वर्गों के नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

वर्ष 2025 "वंदे मातरम्" के 150 वर्ष पूरे होने का प्रतीक वर्ष है। हमारे राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" की रचना बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 7 नवम्बर 1875 को अक्षय नवमी के शुभ अवसर पर की थी। "वंदे मातरम्" पहली बार उनके उपन्यास आनंदमठ के रूप में साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में प्रकाशित हुआ था।

अहमदाबाद मंडल पर इस स्मरण उत्सव समारोह का मुख्य आयोजन मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, अहमदाबाद में किया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक सहित सभी वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। समारोह में उपस्थित सभी ने एक स्वर में "वंदे मातरम" का सामूहिक गायन किया, जिससे संपूर्ण परिसर देशभक्ति, एकता और गर्व की भावना से गूंज उठा। इस दौरान नई दिल्ली में आयोजित उद्घाटन समारोह का लाइव प्रसारण भी देखा गया गया। "वंदे मातरम केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा और स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा का प्रतीक है। यह गीत हमारे देश की एकता, समर्पण और मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना को सशक्त करता है।"

अहमदाबाद मंडल के विभिन्न स्टेशनों, कार्यालयों, डिपो, वर्कशॉप, रेलवे हॉस्पिटल, ट्रेनिंग सेंटर एवं डीजल शेड साबरमती में भी "वंदे मातरम" के सामूहिक गायन कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी स्थान देशप्रेम और भारतीय सांस्कृतिक गौरव की भावना से ओतप्रोत रहे।

साथ ही, मंडल के प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर "वंदे मातरम" से संबंधित विशेष ऑडियो संदेश, उद्घोषणाएं तथा एलईडी डिस्प्ले के माध्यम से यात्रियों को राष्ट्रगीत के इतिहास और महत्व की जानकारी प्रदान की जा रही है। यह जनजागरण पहल आगामी एक वर्ष तक निरंतर जारी रहेगी।

गंगा भारत की जीवनरेखा और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक : वी.एल. कंठा राव

(जीएनएस)। नई दिल्ली। जलशक्ति मंत्रालय के सचिव वी.एल. कंठा राव ने कहा कि गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की धारा है — वह धारा जो सभ्यता, संस्कृति, आस्था और अर्थव्यवस्था सभी को एक सूत्र में बांधती है। उन्होंने कहा कि गंगा भारतीय जीवन का ऐसा प्रवाह है जो उत्तर से दक्षिण, हिमालय से सागर और अतीत से वर्तमान तक निरंतर बहता आया है। यह केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि उस चेतना का प्रतीक है जिसने भारत को हजारों वर्षों तक एकजुट रखा है।

अयोध्या स्थित डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में आयोजित भव्य गंगा उत्सव में राव ने कहा कि गंगा का संरक्षण प्रत्येक भारतीय का नैतिक कर्तव्य और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व है। उन्होंने कहा कि गंगा भारत की नदियों में केवल सबसे विशाल ही नहीं, बल्कि सबसे पवित्र भी है। उसके तटों पर ऋषियों ने वेदों की रचना की, संतों ने ध्यान लगाया, और असंख्य जनों ने जीवनयात्रा का अर्थ खोजा। यही कारण है कि गंगा केवल भौगोलिक प्रवाह नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की आत्मा है।

राव ने बताया कि जलशक्ति मंत्रालय के कुल कार्यों में से लगभग एक-तिहाई कार्य गंगा से संबंधित हैं, जो इसकी महत्ता को दर्शाते हैं। गंगा बेसिन देश के 11 राज्यों में फैला है, जिसमें करीब 150 जिले और 100 से अधिक बड़े शहर शामिल हैं। इस क्षेत्र में देश की लगभग आधी आबादी निवास करती है, और कृषि, उद्योग तथा शहरी जीवन का अधिकांश भाग गंगा के जल पर निर्भर करता है।